



दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

(भारत का नं. 1 महापत्तन)

स्वस्थ रहें,

सुरक्षित रहें,

लहरों का राजाहस

20वाँ अंक

जुलाई, 2020 - दिसंबर, 2020



माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा दिनांक 08 नवंबर 2020 को गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री विजय रूपानी जी एवं माननीय केंद्रीय पत्तन, पोतपरिवहन और जलमार्ग राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री मनसुख एल. मांडविया जी की उपस्थिति में गुजरात के हजीरा और घोघा के बीच रो-पैक्स फेरी सेवा के उद्घाटन हेतु आयोजित समारोह की झलकियाँ।



दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के दौरे पर पधारे पत्तन, पोतपरिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के अपर सचिव श्री संजय बंदोपाध्याय,आईएएस पोर्ट के अध्यक्ष श्री एस.के.मेहता एवं अन्य अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए।



दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के दौरे पर पधारे पत्तन, पोतपरिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के अपर सचिव श्री संजय बंदोपाध्याय,आईएएस पोर्ट की अवसंरचनात्मक सुविधाओं का जायजा लेते हुए।



अध्यक्ष महोदय का सन्देश

श्री संजय कुमार मेहता

भा.व.से.

अध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट



प्रिय साथियों,

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट की हिंदी गृह पत्रिका “लहरों का राजहंस” के बीसवें अंक के माध्यम से पुनः आप सभी से मिलते हुए अत्यंत हर्ष एवं आनंद की अनुभूति हो रही है। दीनदयाल पोर्ट राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु सदैव प्रयासरत रहता है। दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट, कंडला/गांधीधाम की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की अध्यक्षता के दायित्व को भी श्रेयस्कर ढंग से निभा रहा है और नगर में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालय नराकास की गतिविधियों में अपना योगदान देकर इसके गठन के उद्देश्य को पूरा करने में अपना सहयोग दे रहे हैं।

जैसा कि आप सब जानते हैं कि यह वित्तीय वर्ष वैश्विक महामारी कोविड-19 के प्रकोप के दूसरे चरण से गुजर रहा है। इससे निपटने के लिए हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए कोविड प्रोटोकॉल अर्थात् मास्क पहनना, नियमित हैंड सैनिटाइजेशन और सोशल डिस्टेंसिंग इत्यादि का पालन करना नितांत आवश्यक है जिससे न केवल आप खुद की बल्कि अपने साथी कर्मचारियों, अपने परिजनों आदि के भी स्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित कर पाएंगे। साथ ही टीकाकरण भी इससे बचाव का एक महत्वपूर्ण और जरूरी उपाय है। कोविड-19 के इस दूसरे चरण के दौरान भी पोर्ट के कामकाज को सामान्य गति से चालू रखने के लिए दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट प्रबंधन द्वारा लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। कोविड के प्रकोप से हमारे कई अधिकारी और कर्मचारी एवं उनके परिजन संक्रमित हुए। संक्रमितों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हुए और काल-कवलित सहकर्मियों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईश्वर से सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट ने कोविड-19 के प्रभाव के बावजूद मार्च, 2021 को वर्ष में 117.5 मिलियन टन कार्गो हैंडलिंग के आंकड़े को पार करते हुए भारत के सभी महापत्तनों में अपनी नंबर एक की स्थिति को लगातार चौदहवें वर्ष भी बनाए रखा है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पोर्ट के अधिकारियों, कर्मचारियों और प्रयोक्ताओं सहित सभी के संगठित प्रयासों से हम न केवल इस वर्ष भी इस उपलब्धि को बनाये रख पाने में सक्षम होंगे बल्कि इसे और अधिक ऊँचे स्तर तक ले जा पाएंगे और देश की आर्थिक प्रगति में अपने संगठन की ओर से बहुमूल्य योगदान भी कर पाएंगे।

मुझे यह कहते हुए गर्व का अनुभव होता है कि दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट अपने सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्वों का बखूबी निर्वहन कर रहा है। दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के प्रयासों को हर पटल पर सराहा गया है। इसके लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूँ। दीनदयाल पोर्ट के अनवरत विकास और उत्कृष्टता को बनाए रखने का संकल्प आप सभी की सक्रिय भागीदारी से ही संभव है। यह आवश्यक है कि हम सभी एकजुट होकर दीनदयाल पोर्ट की समृद्धि, प्रगति और निरंतर विकास में सक्रिय रूप से सहभागी बनें। अंत में हिंदी गृह पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सफल प्रयासों की सराहना करता हूँ और उन्हें बधाई देता हूँ, साथ ही आशा करता हूँ कि पत्रिका अपने प्रकाशन के उद्देश्य में सफल सिद्ध होगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित, जय हिन्द,





उपाध्यक्ष महोदय का सन्देश

श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस.

उपाध्यक्ष

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट की छमाही हिंदी गृह पत्रिका "लहरों का राजहंस" के बीसवें अंक के माध्यम से पुनः आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए अत्यंत हर्ष एवं आनंद की अनुभूति हो रही है। दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में हमेशा अग्रणी बने रहने का प्रयास करता रहा है, पत्रिका का प्रकाशन इस प्रयास का एक अभिन्न अंग है। हिंदी गृह पत्रिका के माध्यम से पोर्ट में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचनाधर्मिता लोगों के समक्ष प्रस्तुत करने का मंच प्राप्त होता है, साथ ही अपना मौलिक साहित्य सृजित करने की प्रेरणा भी मिलती है। कोविड-19 के प्रभाव के परिणामस्वरूप पत्रिकाओं को हार्ड कॉपी के बजाय डिजिटल प्रारूप में ई-बुक इत्यादि के रूप में प्रकाशित करने के सरकारी निर्देश के अनुपालन में इस अंक को ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। सभी पाठकगण इसे दीनदयाल पोर्ट की आधिकारिक वेबसाइट और राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर ई-पत्रिका पुस्तकालय पर जाकर पढ़ सकते हैं। ई-पत्रिका के रूप में हिंदी पत्रिकाओं की उपलब्धता से इंटरनेट पर हिंदी की विषयवस्तु में अत्यधिक बढ़ोत्तरी हो सकेगी। कंडला/गांधीधाम क्षेत्र की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता का दायित्व का निर्वहन भी दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट द्वारा भलीभांति सफलतापूर्वक किया जा रहा है।

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से ही पोर्ट में राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत सफल कार्यान्वयन संभव है। इस कार्य में पोर्ट के अधिकारी और कर्मचारी पहले से ही अपना योगदान करते आ रहे हैं। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि पोर्ट के कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व को समझते हुए सभी अधिकारी और कर्मचारी अपना योगदान आगे भी बढ़-चढ़ कर देते रहेंगे। इस पत्रिका के माध्यम से पोर्ट के अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिजन अपनी मौलिक सृजन-क्षमता को सबके साथ साझा कर सकते हैं और एक-दूसरे के विचारों को जान-समझ सकते हैं।

मैं पोर्ट के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील करूँगा कि अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए एवं तत्संबंधी सभी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में किये जा रहे दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के प्रयासों को मजबूती प्रदान करें ताकि हमारे प्रयासों को मान्यता प्राप्त हो सके और आने वाले वर्षों में भी पुनः दीनदयाल पोर्ट को मंत्रालय एवं राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हो सके। इस अंक में अपनी रचनाधर्मिता का उदाहरण पेश करने वाले एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनन्दन करते हुए आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। साथ ही कोविड के प्रकोप के इस दौर में अपने सभी साथी कर्मियों के स्वरक्ष बने रहने की कामना के साथ-साथ दिवंगत होने वाले कर्मियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और अपील करता हूँ कि बचाव हेतु सभी लोग कोविड प्रोटोकॉल का पालन और टीकाकारण का लाभ अवश्य उठाएं।

जय हिन्द,



सचिव महोदय का सन्देश

श्री सी. हरिचंद्रन

सचिव

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट



दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट की हिंदी गृह पत्रिका “लहरों का राजहंस” के बीसवें अंक के माध्यम से पुनः आप सब के सम्मुख अपनी बात रखते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। आशा है कि पिछले अंकों की तरह यह अंक भी आप सभी को अच्छा लगेगा और आप सभी इसे सराहेंगे। केंद्र सरकार के पोत परिवहन मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त निकाय होने के नाते दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट भारत सरकार द्वारा लागू सभी नीतियों का अनुपालन करना अपनी संवैधानिक जिम्मेदारी समझता है और भारत सरकार की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन जिम्मेदारीपूर्वक निष्पादित कर रहा है। जैसा कि अवगत है कि संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी को अपनाया गया है अतः हम सबको अपना कार्य यथासंभव हिंदी में करना चाहिए ताकि संविधान की मूल भावना का पालन हो सके। कहने की आवश्यकता नहीं है कि जनता की भाषा में सरकारी कामकाज करने से विकास की गति और तेज होगी और पारदर्शिता आयेगी।

राजभाषा हिंदी में सरकारी कामकाज को बढ़ावा देने के लिए सरकार की नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन की रही है, जिसका अक्षरशः अनुपालन दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट में भी हो रहा है। सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट में भी कई प्रोत्साहन योजनायें लागू हैं। इसके अलावा हिंदी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन, नियमित हिंदी प्रशिक्षण कार्यशालाओं के आयोजन के साथ-साथ लेखन आदि के क्षेत्र में रुचि रखने वाले दीनदयाल पोर्ट के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के लिए अपनी सृजनात्मक क्षमता का सार्वजनिक स्तर पर प्रदर्शन कर पाने में सहायता हेतु हिंदी गृह पत्रिका का छमाही प्रकाशन भी किया जाता है। इन सब का उद्देश्य दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना है। दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट कंडला/गांधीधाम क्षेत्र की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता के दायित्व का भी बखूबी निर्वहन कर रहा है।

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर रहा है तथापि इस क्षेत्र में सतत प्रयास जारी रखने की आवश्यकता है ताकि दीनदयाल पोर्ट राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में शीर्षतम बिंदु को भी स्पर्श कर सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि दीनदयाल पोर्ट के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अपने सक्रिय एवं समर्पित प्रयास करेंगे तो यह अवश्य संभव हो सकेगा। मैं आप सभी से अनुरोध करूँगा कि अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए एवं तत्संबंधी सभी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में किये जा रहे दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के प्रयासों को मजबूती प्रदान करें ताकि हमारे प्रयासों को मूल्यांकन के सभी स्तरों पर मान्यता और सम्मान प्राप्त होता रहे। इस अंक में अपनी रचनाधर्मिता का उदाहरण पेश करने वाले एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनन्दन करते हुए आप सभी को पुनर्श्व बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ।

साथ ही कोविड के प्रकोप के इस भयंकर दौर में संक्रमित होकर अपनी जान गंवाने वाले हमारे पोर्ट कर्मियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। अपने सभी साथी कर्मियों के स्वस्थ बने रहने की कामना के साथ-साथ यह अपील करता हूँ कि कोरोना से बचाव हेतु सभी लोग कोविड प्रोटोकॉल का पालन अनिवार्य रूप से करें और टीकाकरण अवश्य कराएं।

जय हिन्द,



लहरों का राजहंस

20वाँ अंक

जुलाई 2020-दिसंबर 2020

संरक्षक

श्री संजय कुमार मेहता, भा.व.से.,
अध्यक्ष

उप-संरक्षक

श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस.
उपाध्यक्ष

मार्गदर्शक मंडल

श्री सी. हरिचंद्रन, सचिव
श्री आर. मुरुगादास, मुख्य अधिकारी
श्री जी.आर.वी. प्रसाद राव, यातायात प्रबंधक
श्री बी. भाग्यनाथ, वि.स. एवं मु.ले.अ.
श्री प्रदीप महान्ति, उप संरक्षक
डॉ. कालिन्दी गांधी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी

संपादक

श्री शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय, हिंदी अधिकारी

उप-संपादक

डॉ. महेश बापट, वरि. उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी
श्री ओम प्रकाश दादलानी, जनसंपर्क अधिकारी
श्री राजेश रोत, सहायक क्रय अधिकारी

सहायक संपादक मंडल

श्री वेदरुचि आचार्य, सहायक प्रशासनिक अधिकारी
श्री राजेन्द्र पाण्डेय, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
श्री नरेशचंद्र पाण्डेय, हिंदी अनुवादक

टंकण-कार्य / सहयोग

श्री जेड. डी. पटेल, वरिष्ठ लिपिक



सम्पादकीय



शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय

हिंदी अधिकारी एवं
संपादक, लहरों का राजहंस

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट की हिंदी गृह पत्रिका “लहरों का राजहंस” का बीसवां अंक राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार आपके सम्मुख ई-पत्रिका के रूप में प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इसे आप दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट की वेबसाइट और राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर जाकर पढ़ और डाउनलोड कर सकते हैं। इस वर्ष भी कोविड-19 महामारी के प्रकोप ने कार्यालयीन, व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में अपना दुष्प्रभाव डाला है। हमारे कई सहकर्मी और उनके परिजन इस महामारी के चपेट में आ गए, अधिकतर साथी ठीक हो गए परंतु कुछ काल के गाल में भी समा गए। उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए ईश्वर से प्रार्थना है कि उनके शोक संतप्त परिवार को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। साथ ही सभी के स्वस्थ बने रहने की कामना है। महामारी का असर राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियों पर भी पड़ा है। तथापि, हमारे प्रयास अनवरत जारी रहे और इस चुनौतीपूर्ण समय में भी आगे बढ़ने के दृढ़ संकल्प के साथ हम सभी सतत प्रयत्नशील हैं।

हिंदी गृह पत्रिका “लहरों का राजहंस” के माध्यम से दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट में सेवारत अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों की रचनात्मकता एवं उनके विचारों का प्रवाह आप सबके सामने प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही पत्रिका का प्रकाशन दीनदयाल पोर्ट में संघ सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के तहत हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए उठाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण कदम भी है।

दीनदयाल पोर्ट, राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप प्रदर्शन कर रहा है तथापि बेहतरी की संभावनाएं बनी हुई हैं। अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रोत्साहन योजनायें लागू हैं, जिनमें पर्याप्त संख्या में सहभागिता की जा रही है। दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से ही पोर्ट में राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत सफल कार्यान्वयन संभव है। आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में पोर्ट की संवैधानिक जिम्मेदारी के निर्वहन में पोर्ट के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का योगदान आगे भी बढ़-चढ़ कर मिलता रहेगा। इस पत्रिका के माध्यम से अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिजन अपनी मौलिक सृजन क्षमता को साझा कर सकते हैं और एक दूसरे के विचारों को जान-समझ सकते हैं।

सरकारी/सरकार नियंत्रित कार्यालयों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी अधिकारियों के स्तर से लेकर कर्मचारियों के स्तर तक होना अपेक्षित है। अतः सभी अधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति पर निगरानी रखना एवं अधीनस्थ सहकर्मियों को अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए प्रेरित, प्रोत्साहित करना एवं उत्तरदायी बनाना भी अत्यावश्यक है। दीनदयाल पोर्ट में कार्यरत प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी से विनम्र अनुरोध एवं आग्रह है कि अन्य क्षेत्रों की तरह ही राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी अपना सर्वोत्तम योगदान एवं सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करते रहें ताकि संगठित एवं एकजुट प्रयास से प्रबंधतंत्र की अपेक्षानुसार राजभाषा कार्यान्वयन के शीर्षस्थ बिंदु को आगे भी स्पर्श किया जा सके।

सतत सहयोग हेतु प्रबंधन के प्रति, साथ ही साथ सुविज्ञ एवं सुधी पाठकों के प्रति तथा अपनी रचनाएं देने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के प्रति हृदय तल से आभार प्रकट करते हुए तथा अगले अंक में आपसे पुनः मिलने के आश्वासन के साथ आप सभी को शुभकामनाएं देता हूँ।

अस्वीकरण : पत्रिका में लेखकों के अभिव्यक्त विचारों से पोर्ट ट्रस्ट एवं संपादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

पत्रिका में उल्लिखित नियम आदि के मूल पाठ को ही प्राधिकृत माना जायेगा।

अनुक्रमणिका

1. ये कहाँ आ गए हम	डॉ. महेश बापट	1
2. होम्योपैथी	डॉ. प्रियंवदा शर्मा	5
3. माँ	श्रीमती इला वेदांत	8
4. सच्चाई परेशान हो सकती है - हार नहीं सकती !!!	श्री महेश खिलवानी	9
5. नव वर्ष	श्रीमती ज्योति एन. भावनानी	10
6. भगवती निवास	श्रीमती संगीता खिलवानी	11
7. संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ	-----	14-17
8. आत्मविश्वास	श्रीमती इला वेदांत	18
9. साथी	सुश्री मोनिका लोचानी	18
10. परिवर्तन - प्रकृति का एक अटूट नियम	कु. प्रतीक भावनानी	19
11. पुस्तक	श्रीमती ज्योति एन. भावनानी	20
12. व्यवहार का फल	श्रीमती मोना एल. नरयानी	21
13. चल पड़े मेरे कदम	श्री जयन आर. नायर	21
14. संत नेहा सिंह जी	श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी	22
15. गुजरात में मूँग दाल की खिचड़ी खाने के बाद, क्या था जहांगीर का रिएक्शन	सुश्री गीता त्रिपाठी	23
16. क्यों न दी आवाज मुझे	श्रीमती सुमन चंदीरमानी	24
17. जो चाहोगे सो पाओगे	सुश्री गीता त्रिपाठी	25
18. आ गया सावन	श्री कमल असनानी	25
19. शिक्षा एवं संस्कार	श्री गोपाल शर्मा	26
20. इच्छाशक्ति - महात्मा बुद्ध	श्रीमती कल्पना वी. महेश्वरी	26
21. आपकी बेटी	सुश्री रीना महेश्वरी	27
22. सन 2020 : एक सीख	श्री सुब्रत कुमार साहा	28
23. अन्तश्चेतना की पुकार	श्री चित्रांग कामेंदु व्यास	28
24. कोविड 19 के बाद सामाजिक जीवन	सुश्री हनी खिलवानी	29
25. कच्छ इतिहास के पन्नों पर	श्री नवीन के. भोईया	31
26. पथिक	श्री नवीन के. भोईया	31
27. हमारी बेटियाँ	कु. दानिशा	32
28. स्कूल के दोस्त	सुश्री स्वागता साहा	33
29. दूसी बहुत जरूरी है	श्री कैलाश सासिया	33
30. सुरक्षा की पाठशाला	श्री कमल असनानी	34
31. राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी	-----	34
32. हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह की झलकियाँ	-----	35



ये कहाँ आ गए हम

(सत्य घटना पर आधारित कहानी)



पहला दिन दोपहर

अधीश

गुजरने वाला हर एक पल मेरे लिए बहुत भारी सिद्ध हो रहा है। ऐसा लग रहा है कि मैं अंदर से थोड़ा थोड़ा मरता जा रहा हूं। सामने आईसीयू में मेरा पथिक तड़प रहा है। जिंदगी के लिए उसकी लड़ाई चालू है। सभी परिवार जन बाहर खड़े हैं। उसने उस वक्त क्या सोचा होगा यह समझ में नहीं आ रहा। क्या उसकी यह आत्यंतिक भावनाएं अभी भी कायम होंगी? क्या इसीलिए उसका शरीर तड़प रहा है? उससे बात कर मुझे उससे क्षमा मांगनी है। मेरी जिस बात से उसे मानसिक परेशानी पहुंची है उसके लिए मैं अपने आपको जिम्मेदार मानता हूं। क्या भगवान मुझे यह मौका देगा? एक क्षण के लिए भी उससे दूर नहीं जाना चाहता इसलिए मैं उसके सामने ही बैठकर यह देखता रहूंगा।

अपेक्षा

मुझे तो अभी भी इस बात पर विश्वास नहीं हो रहा कि अभी सुबह अपने पिता से मोबाइल की जिद करने वाला यह लड़का ऐसा कोई कदम उठा लेगा। भगवान से प्रार्थना कर रही हूं कि यह इसमें से बाहर आ जाए। जब यह घटना हुई तो इन्होंने बहुत फुर्ती से सारा काम किया। इसलिए हम इसे तुरंत ही अस्पताल ला सके हैं। डॉक्टर साहब को भाभी को फोन कर दिया है और उन्हें भी तुरंत ही आईसीयू पहुंचने के लिए कहा है। घबराहट के मारे मैं कुछ भी उनसे बता नहीं सकी।

भाभी

कोरोना के इस माहौल में अचानक से ऐसा फोन आना कि आप दोनों तुरंत आईसीयू पहुंचो कुछ ठीक नहीं लग रहा। क्या हुआ है कुछ समझ में नहीं आ रहा। अभी तो आईसीयू पहुंचकर ही सांस लेंगे।

डॉक्टर साहब

बड़ी संकट की स्थिति है। आज ही सारे वाहनों का बिना पास के आना जाना बंद कर दिया गया है। कोरोना की भी स्थिति है। और उस पर आईसीयू पहुंचने के लिए फोन आया है। क्या हुआ है कुछ पता नहीं पड़ रहा है। पथिक के बारे में ये कुछ कह रही थी। भगवान सब अच्छा करेगा। मुझे डिपार्टमेंट की गाड़ी लेकर तुरंत पहुंचना चाहिए। इस को मैंने आने से मना किया था लेकिन वह नहीं मान रही।

2 घंटे बाद

अधीश

बहुत सारे मशीन पथिक को लगाए गए हैं। पथिक की सांस, हृदय की धड़कन काफी बदल रही है। वह बार-बार अपने आप को छुड़ाने की कोशिश कर रहा है। इसीलिए अस्पताल के स्टाफ ने उसके हाथ और पांव कसकर बिस्तर से बांध दिए हैं। हे भगवान, मेरे बच्चे को बचाना। उसे इससे बाहर निकालना। डॉक्टर साहब भी आ गए हैं उन्होंने भी सारी स्थिति देखी है। मैंने उनसे कहा कि हमें अगर बेटे को कहीं दूसरे अस्पताल में उचित सुविधा के लिए ले जाना है तो आप तय करें। हम उसे तुरंत ही यहां से ले जाएंगे। लेकिन उनका कहना है कि हमें अभी इसकी जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।

भाभी

बड़ी विकट स्थिति है। 19 की उम्र में पथिक का इस तरह से फांसी खा लेने का निर्णय लेना, अजीब लग रहा है। इसमें से यह बच पाएगा कि नहीं यह अभी तो नहीं कह सकते। मुझे कैसे भी करके अपेक्षा के पास पहुंचना चाहिए। उसके साथ रहना चाहिए और उसे हौसला देना चाहिए। मुझे लगता है कि हम लोगों का इनके घर आना जाना कुछ कम हो गया है। अगर हमारा संपर्क बना रहता तो शायद यह स्थिति नहीं आती।

छोटे बाच्चा

भैया को मैंने बहुत बार समझाया था कि वह छोटी-छोटी बातों पर जिद और जिरह करना छोड़ दें। बच्चे बड़े हो

रहे हैं उनके साथ कुछ अलग ढंग से बातचीत करनी पड़ेगी। अब उनका विद्रोह में खड़ा होना उनकी उम्र का परिचायक है। कुछ चीजों के लिए हमें ही शायद समझौता करनी पड़ेगी। आज पथिक ने एक आखरी कदम उठा लिया जो कि हमारे लिए असहनीय है।

डॉक्टर साहब

इतना तो निश्चित है कि घटना के तुरंत बाद जिस तरह से अधीश ने सारी चीजों को बहुत तेजी से हैंडल किया है उससे पथिक के बचने की संभावना हो गई है। इतने कम समय में अस्पताल में पहुंचा पाना अपने आप में एक सराहनीय कदम है। हालांकि पथिक के हार्ट रेट, बाकी पैरामीटर्स कुछ चिंताजनक हैं। लेकिन मैं यह देखकर हैरान हूं कि इसे एंडोट्र्यूब नहीं डाली गई। इसे ऑक्सिजन पर रखा गया है जो कि वह स्वयं अपने श्वसन द्वारा ले रहा है, जो एक अच्छी बात है। इसके जीवित रहने के चांसेस बढ़ जाते हैं। इसका एक्स-रे वर्गीकरण होना है जो आने के बाद फैक्चर तो नहीं है, इस बात पर आगे के उपचार को तय किया जा सकेगा।

रात 10:00 बजे

अधीश

अभी भी पथिक की वैसी ही तड़पन चालू है। मैं क्या करूँ? अस्पताल के डॉक्टर अभी राउंड पर नहीं आए हैं। बार-बार उसके सिरहाने जाकर मशीन की तरह देखने लगता हूं। ऐसा लगता है कि अभी ही यह उठ बैठेगा और मुझसे बातें करने लगेगा। जी उचाट होने लगा है। डॉक्टर साहब और भाभी जी भी आ गए हैं। वे लोग तो बार-बार यही कह रहे हैं कि सब ठीक हो जाएगा। समय लगेगा अभी शायद इसे फिट्स आ रहे हैं। यह एक बार कंट्रोल हो जाएं तो काफी कुछ राहत मिल जाएगी। एक्स-रे भी नॉर्मल ही दिख रहे हैं फ्रैक्चर जैसा कुछ भी लगता नहीं है। मुझे भी उम्मीद लग रही है कि बच्चा इससे बाहर आ जाएगा।

छोटे चाचा

आज दोपहर को डॉक्टर साहब को जब मैं घर पर छोड़ने जा रहा था काफी सारी बातें हुईं। डॉक्टर साहब इस बात से बहुत आंदोलित थे कि इस तरह की घटना अपने परिवार के बच्चों के साथ भी घटित हो सकती है यह तो कभी सोचा ही नहीं था। उनका यह भी कहना था कि बच्चों को अपने मन की बातें किसी से कहने के लिए एक रिश्ता कायम होना चाहिए। और ऐसे रिश्ते के लिए परिवार के सभी लोगों का आपस में अनौपचारिक रूप से मिलना जुलना चलते रहना चाहिए। जो प्रथा बड़े भाई ने चालू की है कि हर रविवार को सभी को एक साथ मां पिताजी के घर पर इकट्ठा होना है, साथ में खाना खाना है, यह प्रथा सीरियसली नहीं ली जा रही। दादा-दादी के साथ नाती पोतों का संबंध एक अलग तरह का होता है। और उसमें से ही कई सारी समस्याओं का समाधान हो सकता है, वैसे भी, जब सब भाई बहन चाहे किसी भी पीढ़ी के हों, आपस में मिलेंगे तो आपसी रहवास से रिश्ते मजबूत बनेंगे। फिर ऐसी घटनाओं को टाला जा सकेगा।

डॉक्टर साहब

अभी राउंड पर डॉक्टर आए थे उनसे बातचीत कर बच्चे की हालत के बारे में पूछताछ की। दोपहर से घटने वाली घटनाओं का संदर्भ लगाने की कोशिश कर रहा हूं और ऐसा ध्यान में आ रहा है कि इसमें बहुत अच्छे संयोग हो रहे हैं। दोपहर को इस घटना के बाद बहुत जल्दी अधीश का एक्शन में आना, तुरंत नजदीक के अस्पताल में आ जाना, और वहां पर किसी ऐसे अनुभवी डॉक्टर का होना, जिसने पिछले 10 महीने में इस तरह के कम के कम 8 केस देखे हुए हैं, इसलिए इसके बचने की संभावनाएं बहुत बढ़ रही हैं। उन्होंने बहुत अच्छी तरह केस का विश्लेषण किया एवं कहा कि ऐसी स्थिति में बच्चे को यहां से किसी दूसरी जगह शिफ्ट करना खतरे से खाली नहीं होगा। मैं भी उनकी इस बात से सहमत हूं। और जहां तक बच्चे के पैरामीटर को समझ पा रहा हूं मुझे ऐसा लगता है कि कल सुबह तक कुछ अच्छे परिवर्तन दिखाई पड़ने लगेंगे।

दूसरा दिन सुबह

अधीश

रात भर पथिक भी बैचैन था। हालांकि बीच-बीच में कुछ कालखण्ड ऐसा भी निकलता था जिसमें वह शांत रहता था। मैं भी बैचैन था कि क्या होगा? हालांकि डॉक्टर साहब से बात करने के बाद यह तो तय हो गया था कि लाइन ऑफ

ट्रीटमेंट एकदम बराबर है और हमें बच्चे को यहां से कहीं शिफ्ट नहीं करना। मैं बार-बार अपने मन में यह सोचता रहता था कि मैं इस की बेचैनी को अगर कम करना चाहूं तो मुझे इस से माफी मांग लेनी चाहिए। चाहे यह उसे सुन सकता हो या नहीं और इसी उधेड़बुन में मैंने सुबह 3 से 4 के बीच में कभी इसके कान में अपनी इस भावना का प्रदर्शन किया और उसे सूचित किया कि वह अब अपने मन से इन बातों को निकालकर अपना गुस्सा शांत कर ले। 5 बजे के बाद पथिक धीमे धीमे शांत होता गया और इसके सारे पैरामीटर्स भी नॉर्मल होने लग गए थे। सुबह 6 बजे तो इसने आंखें खोली मुझे देखा, पहचाना और मेरी बातों को रिस्पॉन्ड किया। मैं इस बात को समझ नहीं पा रहा हूं। लेकिन उसके ठीक होने के बारे में मुझे अब धीमे-धीमे विश्वास होने लगा है।

डॉक्टर साहब

सुबह सवेरे अधीश का फोन आया और उसने यह अच्छी खबर सुनाई कि पथिक ने आंखें खोली हैं और वह होश में आ रहा है, रिस्पॉन्ड भी कर रहा है। वह इस बात को लेकर काफी उत्साहित, उत्तेजित लग रहा था। मुझे भी अंदर तक कहीं समाधान महसूस हुआ। यह वाकई में एक अच्छी खबर है।

भाभी

पथिक के होश में आने की खबर से मुझे बहुत अच्छा लगा। हम लोग अभी ही मिलने चले जाते हैं और अपेक्षा से भी मुलाकात कर लेंगे। डॉक्टर साहब का कहना है कि अधीश ने उसे जन्म दिया था और इस दूसरे जन्म का भी श्रेय उसे ही जाएगा। अगर इसके विपरीत कुछ हो जाता तो पता नहीं अधीश के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता? लेकिन एक बात तो तय है कि इस घटना के बाद से अब जिन बातों को अधीश जोर देकर अपने बच्चों को बता सकता था अब उन बातों पर भी उसे कॉन्फिडेंस कम ही आएगा। इससे और भी नुकसान होगा।

5 दिन बाद

अधीश

क्या करूं, कैसे करूं समझ में नहीं आ रहा। आज डॉक्टर साहब से बड़ी लंबी बात हुई। उन्होंने तो पहले ही कहा था कि इस घटना के बारे में शायद पथिक को कुछ भी याद ना रहे। इसे थोड़े समय की विस्मृति कहा जाएगा। मेरी समस्या यह है कि मुझे यह सब याद है। और यह मेरे स्मृति पटल से कभी भी जाने वाला नहीं है। लेकिन दोनों ही बच्चों के व्यवहार में कुछ भी अंतर नहीं आया। जिस बात को लेकर यह घटना घटित हुई थी, उस मोबाइल की जिद पर तो अभी भी दोनों ही बच्चे अड़े हुए हैं और किसी भी तरह अपने वर्तमान में नहीं आना चाहते। वह कुछ भी लगन से करना नहीं चाहते। पहले भी मैं उन्हें इसी बात पर टोका करता था एवं कहा करता था कि पहले अपनी प्राथमिकता तय करो। बाकी की बातें बाद में। लेकिन अब मेरे कहने में वह जोर भी नहीं आ रहा मैं क्या करूं?

डॉक्टर साहब

आज अधीश को मैंने यह भरसक समझाने की कोशिश की कि ना तो वह पहले गलत था और ना तो अब गलती पर है। अगर उसने अपने आप से विश्वास खो दिया तो परिवार को अच्छी दिशा दिखाने से वह चूक जाएगा। इसलिए अब उसे पूरी हिम्मत के साथ एवं कॉन्फिडेंस से कुछ बातों का निर्णय करना ही पड़ेगा। हां कुछ चीजों में उसकी बेवजह जिद और अवास्तविक सोच को उसे बदलना पड़ेगा। बच्चे को क्या करना चाहिए यह तय करने की बजाय उसे क्या करना अच्छा लगेगा इसका निर्णय उसी पर छोड़ देना एवं अगर उस बात पर वह दृढ़ नहीं रह पाता है, तो उसे कुछ समय मर्यादा में अपने जीवन यापन के लिए कुछ मेहनत करने की बात उसके सामने रखनी पड़ेगी। अन्य मित्रों से अपनी पारिवारिक आर्थिक क्षमता की तुलना न करते हुए अधिकाधिक वस्तुओं की मांग करते रहना किसी भी तरह से उचित नहीं समझा जा सकता। वह बार-बार कहता रहा कि डॉक्टर साहब आजकल माहौल इतना खराब हो गया है कि जिन चीजों को हम अपने बच्चों को नहीं देना चाहते बच्चों के मित्रों के मां पिता उन्हें सरेआम देते हैं। फिर हमारे बच्चे अगर उन्हीं चीजों की मांग हम से करने लगें तो हम कैसे मना कर सकते हैं? लेकिन मेरा कहना था, जमाना क्या करता है इस के बजाए हमारे बच्चों को क्या करना चाहिए इसकी सीख हम दे सकते हैं और उतना ही हमारे हाथों में है।

अपेक्षा

मेरा तो मानना है कि इनकी बच्चों से उम्मीदें बहुत ज्यादा हैं और इसी वजह से बच्चे कुछ भी नहीं कर पा रहे। उन्हें अपनी मर्जी से कुछ ना कुछ करने देना चाहिए।

छोटे चाचा

दोनों बच्चे केवल मेरी ही बात सुनते हैं और कई बार ऐसा होता है कि घर में कुछ झगड़े के बाद वह मुझसे आकर बात करते हैं। किसी को अप्रिशिएट करने के मामले में कभी भी भैया पीछे नहीं रहे लेकिन अबकी बार ऐसा क्या हो गया है कुछ समझ नहीं आता। गए बहुत दिनों से मेरा भी संपर्क इन दोनों से काफी हृद तक कम हो गया है। कई बार इन दोनों को घर से बाहर निकालने की भी बात हुई है। एक बार निकाला भी है भैया ने, मैंने ही मामला सुलझाया था।

ताऊजी

जो प्रथा हमने बनाई थी, रविवार को एकत्रित होकर साथ में कुछ समय रहने एवं भोजन करने की, उसमें सभी का सहभागी होना बहुत जरूरी था। शुरुआत में तो सब लोग आते थे लेकिन धीमे-धीमे कुछ लोगों की इसमें रुचि कम होती गई और कुछ तो लचीलापन और हमें समय कम मिलता है, हम नहीं आ पाते हैं, हमारी व्यस्तता बहुत ज्यादा है, ऐसे बहाने आते गए। इस तरह से सब लोगों का जो एक साथ घुल मिलकर साथ में रहना संभव था, वह कम होते गया। इस सम्मेलन से दोनों पीढ़ियों का एक दूसरे से मिलना, अपने-अपने अनुभव, सुख-दुख, तकलीफें, एक दूसरे के साथ बांटना, हो पाता था। इसके महत्व को बाकी दूसरी बातों के सामने कम कर दिया गया। मां-पिताजी का भी मन इस तरह से यहां पर बना रहता एवं वह भी सबको साथ में देखकर खुश रहते थे। पिछले कुछ वर्षों से उनका भी मन यहां रहने से कुछ-कुछ उचटने सा लगा है। जब देखो तब गांव जाने की बात करने लग जाते हैं। इस उम्र में और स्वास्थ्य की ऐसी अवस्था में उनका गांव में जाकर रहना मुझे तो उचित नहीं लगता।

बच्चा

मुझे क्या चाहिए यह शायद कोई समझ नहीं पा रहा। मैं भी दूसरे बच्चों की भाँति सारे गैजेट चाहता हूँ। मैं सबके साथ खेलना, कूदना और मस्ती करना चाहता हूँ। मैं पढ़ना भी चाहता हूँ। लेकिन यह मैं मानता हूँ कि मुझसे पढ़ाई में मेहनत नहीं होती दूसरी अन्य विधाओं में मैं कुछ कर सकता हूँ। मुझे स्वतंत्रता चाहिए। मोबाइल के बारे में रोक-टोक नहीं होना चाहिए। और नेट पैक अच्छा होना चाहिए। जिससे मैं कुछ काम कर सकूँ।

10 दिन बाद

अधीश

मैं किसी से कुछ भी नहीं कह पा रहा हूँ। बच्चों की जिद दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। पुरानी घटना याद कर मेरा दिल बैठ जाता है, और मुझे लगने लगता है कि मैं जो उनसे अनुशासन रखने के लिए कह रहा हूँ, उस बात का कोई मतलब उनके लिए नहीं बचा है। आज की तारीख में कोरोनावायरस की वजह से जो लॉक डाउन और बंदिशें लागू की गई हैं उनका बच्चे पालन नहीं करना चाहते। उनका कहना है कि बाकी कोई भी तो इसका पालन नहीं कर रहा। केवल आप ही हो जो हमें कहते हैं कि यह हमें कड़ाई से पालन करना चाहिए। बच्चों के मित्र दरवाजे पर आकर घंटों तक बतियाते रहते हैं, यह भी मुझे अच्छा नहीं लगता और टोकने पर मुझे विलेन करार दे दिया जाता है। अब तो मुझे उन्हें टोकने से भी डर लगने लगा है। पुरानी बात याद आने लगती है और मैं ढीला पड़ जाता हूँ।

डॉक्टर साहब

जिस बात का मुझे आभास हो चला था, वही होती जा रही है, हम फिर उसी स्थिति पर पहुंच गए हैं जहां से इस स्थिति में एक मोड़ आ गया था लेकिन अब उस स्थिति को अच्छी दिशा की ओर मोड़ने वाला स्वयं एक दुविधा और कमजोर मानसिकता से ग्रस्त हो चुका है।

जिसे उस घटना की याद भी नहीं है उसे उस घटना से भरपूर बल मिल रहा है, और जिसे उस घटना की याद है वह उसे याद कर कर घबरा उठता है और कुछ भी बोल नहीं पाता।

यह स्थिति ठीक नहीं है इसे प्रयत्न पूर्वक सुधारना पड़ेगा। मैंने अधीश से बलपूर्वक कहा है कि इसमें तुम्हें ही लीड लेनी पड़ेगी। पुरानी बातों को और खासकर किसी घटना को भूल जाना पड़ेगा। इसके लिए अपने आप को जिम्मेदार मानना भी दिमाग से निकालना पड़ेगा, तभी कुछ राह निकलेगी।



होम्योपैथी



डॉ. प्रियंका शर्मा, बी.एच.एम.एस.

विजिटिंग कन्सल्टेन्ट-होम्योपैथी, पोर्ट अस्पताल

होम्योपैथी क्या है ?

होम्योपैथी एक चिकित्सा प्रणाली है जो सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरान्टर पर विश्वास करती है। होम्योपैथी को दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी उपचार पद्धति माना जाता है।

सैमुअल हैनीमैन (1755-1843) को होम्योपैथी प्रणाली का संस्थापक माना जाता है। वह जर्मनी के मीसेन में पले बढ़े, 1779 में एरलगेन में अपनी चिकित्सा की डिग्री प्राप्त की, और 1843 में पेरिस में मृत्यु हो गई।

होम्योपैथी कैसे काम करती है ?

होमियोपैथी इस विचार पर आधारित है कि "LIKE CURES LIKE"। महामारी में जबरदस्त सफलता के कारण होम्योपैथी 19 वीं सदी में लोकप्रिय हुई। 20 वीं सदी के अंत और 21 वीं सदी की शुरुआत में दुनिया के कई हिस्सों में इसकी लोकप्रियता बढ़ी। होम्योपैथी अब दुनिया भर में उपलब्ध है।

होम्योपैथिक दवा बनाने की प्रक्रिया को ''औषधिकरण'' "POTENTIZATION AND DYNAMIZATION" कहा जाता है। मेडिसिन को ठोस रूप में रोगी को ग्लोब्यूलन्स, तरल और अन्य विभिन्न तरीकों से दिया जा सकता है। रोगी में मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक स्वास्थ्य के आधार पर होम्योपैथिक दवा दी जाती है। होम्योपैथी का मानना है कि किसी बीमारी के लक्षणों को दबाना उस बीमारी का इलाज नहीं है।

होम्योपैथिक उपचार के लाभ :

मानसिक स्वास्थ्य देखभाल के लिए पारंपरिक चिकित्सा पद्धति में चिंता और अवसाद से पीड़ित लोगों को शांत करने वाली दवाओं को निर्धारित करना शामिल है। ये दवाएं न केवल किसी व्यक्ति को उत्सर्जित करने की क्षमता को बाधित करती हैं, वे कार्यात्मक होने के लिए एक बाहरी स्त्रोत पर एक निश्चित मनोवैज्ञानिक निर्भरता और लत भी पैदा करती हैं। दूसरी ओर होम्योपैथी समझती है कि किसी भी बीमारी के लक्षण जो संकेत देते हैं कि शरीर या तो उस बीमारी से लड़ रहा है या उसके लिए अनुकूल है, जिसका अर्थ है कि उसे लक्षणों को दबाने के लिए दवाओं की जरूरत नहीं है बल्कि लड़ने में सहायता की आवश्यकता है। तो यह कहा जा सकता है कि ''होम्योपैथी'' रोगों को ठीक करने पर केंद्रित है।

1. एलर्जी का इलाज करता है :

अस्थमा एक पुरानी बीमारी है जिसके परिणामस्वरूप श्वास नलिका में सूजन आ जाती है, जिसके कारण छाती में दर्द, सांस फूलना या सांस की तकलीफ, खाँसी और घबराहट होती है। अस्थमा किसी भी उम्र में विकसित हो सकता है लेकिन आम तौर पर कम उम्र के बच्चों में पाया जाता है, यह अन्य तरीकों से भी ट्रिगर हो सकता है जैसे कि आनुवंशिकी, एलर्जी, जलन, समय से पहले जन्म, खाँसी या सर्दी, बदलते मौसम...। निर्धारित पारंपरिक चिकित्सा में अधिक समय लगता है और रोगी को इनहेलर पर निर्भर बनाने की प्रवृत्ति होती है जो वायु पथ की सूजन को कम करता है। दूसरी तरफ होम्योपैथी हाथ, प्रत्येक रोगी में अस्थमा के विकास के पीछे के कारण पर ध्यान केंद्रित करता है। होम्योपैथी रोगी के जीवन को बेहतर बनाने में मदद करने वाले अस्थमा को पूरी तरह से ठीक करता है।

2. पुराने रोगों का इलाज करता है:

तीव्र बीमारियों को अल्पकालिक कहा जाता है : हालाँकि, उनकी पुरानी जड़ें हो सकती हैं। मानसिक या भावनात्मक आघात आम तौर पर ज्यादातर पुरानी बीमारियों के मूल कारण होते हैं, मनोवैज्ञानिक आघात के अलावा कुछ अनहेल्दी या बीमार उपचारित शारीरिक चोटों के अलावा पर्यावरण में विशेष तत्वों के प्रति संवेदनशीलता पुरानी बीमारियों का कारण बन

सकती है। दोहराव या पुरानी बीमारियाँ किसी व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को कम करती हैं। होम्योपैथी पिछले आधात और वर्तमान लक्षणों के बीच संबंधों को समझने के लिए एक व्यक्ति के अतीत और वर्तमान स्वास्थ्य मुद्दों में गहरा गोता लगाती हैं। रोगी की अनूठी पुरानी बीमारी की जड़ के अनुसार दवाएं निर्धारित की जाती हैं। पुरानी बीमारी के इलाज के लिए होम्योपैथी की शानदार प्रतिक्रिया है।

3. शारीरिक प्रतिरोध को मजबूत करता है:

चूंकि होम्योपैथी समानता के सिद्धांत पर कार्य करती है, शरीर की प्रतिरक्षा में सुधार के लिए इसका दृष्टिकोण तत्वों की पहचान करना है, जब बड़ी मात्रा में शरीर के संपर्क में आने से शरीर दृढ़ता से प्रतिक्रिया करता है और संकट के लक्षणों को प्रदर्शित करता है। होम्योपैथी चिकित्सक, तब दवाओं को निर्धारित करता है, जो नियमित अंतराल पर शरीर के अंदर ट्रेस मात्रा में समान तत्वों को जारी करते हैं, जिससे शरीर को रोग से लड़ने वाले ऐंटीबॉडी का निर्माण करने की अनुमति मिलती है, जो तब रोग के प्रति शरीर की सहनशीलता में सुधार करता है।

4. महामारी रोगों में उपयोग करें:

हमने एक महामारी “कोरोना” का सामना किया, हमने इसके प्रतिकूल प्रभाव देखे हैं, जिसके परिणाम स्वरूप मानव जीवन और यहां तक कि आर्थिक स्थिरता का नुकसान हुआ है। अतीत में भी हमें हैंजा, इबोला वायरस इत्यादि जैसी महामारी की बीमारी हो चुकी है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम उनसे पीड़ित नहीं हैं। होम्योपैथी अन्य लोगों में वायरल बुखार, फ्लू और चिकनपॉक्स जैसी महामारी की बीमारियों का विकल्प है।

5. शल्य-चिकित्सा को टालना एवं किफायती चिकित्सा

होम्योपैथी लागत प्रभावी, प्राकृतिक और सुरक्षित है। होम्योपैथ भी मानते हैं कि सही दवा दी गई है, होम्योपैथी भी गर्भाशय और अंडाशय, एपेंडिसाइटिस, टॉन्सिल, साइनसाइटिस, बवासीर, अन्य सौम्य दृश्यमार, गुर्दे की पथरी के अलावा अन्य बीमारियों में रोगी को बिना ऑपरेशन के ठीक कर सकती है। होम्योपैथी भी शरीर को ऑपरेशन से ठीक करने में सहायक भूमिका निभा सकती है। चरम परिस्थितियों में ऑपरेशन ही एकमात्र विकल्प उपलब्ध है, वास्तव में होम्योपैथी सबसे अच्छा काम करती है यदि प्रशासित हो जब लक्षण पहली बार दिखना शुरू हो।

होम्योपैथी दवाओं के उपयोग के लिए दिशानिर्देश :

1. 30 मिनट नियम

आम तौर पर यह सुझाव दिया जाता है कि होम्योपैथिक दवा लेने से पहले भोजन के कणों को मुंह से निकाला जाना चाहिए। इसका कारण यह है कि अधिकांश होम्योपैथिक दवाएं मुंह के श्लेष्म झिल्ली से अवशोषित होती हैं, और खाद्य कणों की एक कोटिंग होम्योपैथिक दवाओं के पूर्ण अवशोषण को रोक सकती हैं। होम्योपैथिक दवा लेने से 30 मिनट पहले कुछ भी खाने से परहेज करने की सलाह दी जाती है।

2. अपने चिकित्सक से परामर्श करें :

भले ही होम्योपैथी हानिरहित है, यह हमेशा एलैपैथिक दवाओं के साथ मिश्रण या दवा की उच्च खुराक नियमित रूप से लेने से पहले अपने चिकित्सक से परामर्श करने के लिए सलाह दी जाती है।

3. भंडारण :

होम्योपैथिक दवाएं बहुत ही संतुलित रूप से मिश्रित मिश्रण हैं: इसलिए यह आपके सभी होम्योपैथिक दवाओं को अंधेरे, ठंडी और सूखी जगहों पर संग्रहीत करने का सुझाव दिया गया है।

इन चीजों से बचें

गोली को स्पर्श न करें :

अपनी होम्योपैथिक गोलियों को छूना सबसे बड़ी समस्या है। आपकी हथेलियों से तेल या पानी, गोलियों के साथ प्रतिक्रिया कर सकते हैं, उन्हें बेकार या आंशिक रूप से अंतर्ग्रहण पर प्रदान कर सकते हैं। तरल होम्योपैथिक दवा आम तौर पर एक ड्रॉपर के साथ आती हैं और गोलियों के लिए, दवा की दयूब की टोपी पर आवश्यक मात्रा डालना बेहतर होता है और उन्हें सीधे आपके मुंह में डालना होता है।

सभी व्यसनों से बचें :

यह सुझाव दिया जाता है कि यदि आप होम्योपैथिक दवाओं का उपयोग कर रहे हैं, तो बेहतर होगा कि आप शराब जैसे नशीले पदार्थों का सेवन न करें।

अधिकतर पूछे जाने वाले सवाल :

1. क्या हम एलोपैथिक और होम्योपैथिक दवाओं को मिला सकते हैं ?

ज्यादातर मामलों में, हाँ । क्योंकि 60-70% रोगी जो एक होमियोपैथ के पास जाते हैं, उन्हें पहले से ही मधुमेह, उच्च रक्तचाप आदि के लिए अलग-अलग बीमारियों से कुछ अन्य दवा दी जाएगी । होम्योपैथिक दवाएं बेहद पतला और प्राकृतिक हैं, एलोपैथिक दवाओं के खिलाफ कोई प्रतिबंध नहीं है । हालांकि, दोनों दृष्टिकोणों के संयोजन से पहले एक चिकित्सक से परामर्श करने की सिफारिश की जाती है ।

2. होम्योपैथी के लिए परामर्श प्रक्रिया क्या है और यह कितने समय तक चलती है ?

परामर्श की लंबाई रोग पर निर्भर करती है । यदि इसकी एक गंभीर बीमारी जिसमें तत्काल राहत की आवश्यकता होती है, तो चिकित्सक एक अस्थायी राहत एजेंट लिख सकता है । हालांकि, एक होम्योपैथिक चिकित्सक बीमारी के साथ मानव शरीर को ठीक करता है और इस तरह होम्योपैथिक चिकित्सक के साथ सत्र में समय लग सकता है, क्योंकि वे एक निश्चित नुस्खे का उल्लेख करने से पहले कई प्रश्न और विवरण पूछते हैं ।

3. होम्योपैथी दवाएं किससे बनती हैं ?

होम्योपैथिक दवाओं के संयोजन से बना है : प्राकृतिक सामग्री और जड़ी बूटी, खनिज, पशु उत्पाद, स्वस्थ तत्व, शक्तिशाली ऊर्जा ख्रोत और शक्तिशाली एंटीजन ।

होम्योपैथी के मिथक एवं तथ्य

मिथक :- 'होम्योपैथी वैज्ञानिक नहीं है'

तथ्य :- वैज्ञानिक अनुसंधान डेटक, नैदानिक अध्ययन और नैदानिक परिणामों के परीक्षण का एक बड़ा निकाय है, जो दुनिया पर के विभिन्न आणविक जीवविज्ञानी, भौतिकविदों और नैनोटेक्नोलाजी द्वारा किए गए हैं, जिन्होंने साबित किया है कि होम्योपैथी है वैज्ञानिक ।

मिथक :- 'होम्योपैथिक दवाएँ धीरे-धीरे काम करती हैं'

तथ्य :- हालांकि यह सच नहीं है, लेकिन दो सामान्य कारक (समय और परिवर्तन की स्थिति) हैं जो तेजी से आरोग्य प्राप्ति का निर्धारण करते हैं । होम्योपैथी दमा, तीव्र बुखार, पित्ती संबंधी चक्कते, अस्थमा के तीव्र संक्रमण में काम करता है । दुर्भाग्य से लोग अंतिम उपाय के रूप में एक होमियोपैथ में जाते हैं और तब तक बीमारी काफी बढ़ चुकी होती है । समय के साथ रोग की गंभीरता बढ़ जाती है । जितनी जल्दी आप एक होम्योपैथ से परामर्श करेंगे उतनी जल्दी परिणाम प्राप्त होंगे

मिथक :- होम्योपैथिक दवाइयाँ लेने के लिए एक से एक मजबूत इमारतें बनानी चाहिए ।

तथ्य :- होम्योपैथी में इस तरह का कोई आहार प्रतिबंध नहीं है, हालांकि आहार रोग की प्रकृति पर लागू होता है । प्रतिबंध हमेशा विशेष बीमारी की स्थिति के लिए सामान्य प्रबंधन के रूप में आते हैं । उदाहरण के लिए : डायबिटीज में मिठाई और चावल से परहेज, उच्च कोलेस्ट्रॉल स्तर वाले रोगियों में तैलीय और तले हुए भोजन से परहेज ।

मिथक :- होम्योपैथी में गंभीर / उन्नत रोगों के लिए कोई उपचार नहीं है ।

तथ्य :- होम्योपैथी किसी भी अन्य चिकित्सा प्रणाली की तरह है जिसमें एक्यूट से लेकर क्रॉनिक तक की विभिन्न स्थितियों का इलाज किया जा सकता है । आप होम्योपैथिक दवाएं लेकर सर्जरी से बच सकते हैं । संक्षेप में होम्योपैथी में 'C से C' तक यानि कि कोल्ड से कैंसर तक का इलाज किया जा सकता है ।

मिथक :- होम्योपैथिक डॉक्टर ऐसे शावक हैं जिनके पास चिकित्सा के क्षेत्र में औपचारिक प्रशिक्षण नहीं है।

तथ्य :- हमारे देश में होम्योपैथिक डॉक्टर के रूप में स्नातक होने में साढ़े पांच साल लगते हैं। होम्योपैथी को संसद के एक अधिनियम द्वारा मान्यता प्राप्त है। इस पाठ्यक्रम का पाठ्यक्रम पारंपरिक चिकित्सा के समान है। 180 से अधिक मेडिकल कॉलेज हैं, जो होम्योपैथी में डिग्री और स्नातकोत्तर अध्ययन प्रदान करते हैं।

मिथक :- "होम्योपैथिक मेडिसिन में STEROID & HEAVY METALS का उपयोग होता है"

तथ्य :- होम्योपैथी में, स्टेरॉयड के लिए कोई जगह नहीं है। चूंकि सभी ख्रोत सामग्री औषधि और ट्रिटिशन की प्रक्रिया से गुजरती हैं, इसलिए इसमें कच्चे धातु के तत्वों का भी पता नहीं चलता। होम्योपैथिक फार्मेसियों में सख्त मानकीकरण और गुणवत्ता नियंत्रण प्रणाली है। होम्योपैथिक गोलियां स्टेरॉयड परीक्षण के लिए सकारात्मक दिखाती हैं क्योंकि कुछ पौधों की दवाओं में सक्रिय सिद्धांत होते हैं जहां प्राकृतिक स्टेरॉयड सामग्री मौजूद होती है, इस प्रकार यह सल्फर पाउडर को डुबो देता है और स्टेरॉयड के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखाता है।

मिथक :- होम्योपैथी हमेशा उपचार के शुरुआती दिनों के दौरान रोग को बढ़ा देती है।

तथ्य :- "होम्योपैथी हमेशा कुछ हद तक उपचार के समय से पहले होने वाली छूट को स्वीकार करता है" जब रोगी कुछ दमनकारी उपचार के बाद होम्योपैथी से संपर्क करता है, तो होम्योपैथिक दवाएं उन्हें ठीक करने से पहले सतह पर लाएंगी। इसे होम्योपैथिक वृद्धि कहा जाता है जो जल्द ही उपचार के दौरान गायब हो जाएगी।

विश्व होम्योपैथी दिवस हर साल 10 अप्रैल को मनाया जाता है। यह दिन दवाओं के होम्योपैथी प्रणाली के जनक डॉ. सैमुअल हैनीमैन के जन्म का सम्मान करने के लिए मनाया जाता है। होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली होम्योपैथी केंद्रीय परिषद अधिनियम, 1973 के तहत भारत में एक मान्यता प्राप्त चिकित्सा प्रणाली है। इन दवाओं को राष्ट्रीय प्रणाली के रूप में भी मान्यता प्राप्त है।

अंत में प्रसिद्ध भारतीयों के कुछ उद्धरण प्रस्तुत हैं :

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम - "मुझे होम्योपैथी में विश्वास है"

श्री नरेंद्र मोदी - "होलिस्टिक हेल्थकेयर एक बहुत बड़ा आकर्षण बना हुआ है। बेहतरीन डॉक्टर होम्योपैथी की ओर बढ़ रहे हैं। होलिस्टिक हेल्थकेयर के लिए एक मूँह है। तनावपूर्ण जीवन से तनाव मुक्त जीवन की ओर जाने का मूँह है।"

माँ

जीवन का आधार है माँ,
ईश्वर का वरदान है माँ।

सकल रूप उसमें है बसते,
सब करती वह हंसते-हंसते।

प्रीति का पर्याय है माँ,
जीवन का आधार है माँ।

निडर, निखालस, नम्र छवि वह,
सरल, सौम्य रवि सम तेजोमय।

शक्ति का अवतार है माँ,
जीवन का आधार है माँ।

उससे ही घर उपवन उपवन,
उससे सब कुछ चंदन-चंदन।
खुशियों की बौछार है माँ,
जीवन का आधार है माँ।



श्रीमती इला वेदांत
कनिष्ठ लिपिक
नगर विकास संघ



याच्चार्ड परेशान हो सकती है - हार नहीं सकती !!!



श्री महेश खिलवानी

सहायक

सिविल अभियांत्रिकी विभाग

“ममा, मेरे मामा भी कंस मामा हैं ना ?”

“नहीं बेटा ऐसा नहीं कहते।”

“क्यूँ मां कंस भी अपनों को मारते थे और मामा ने भी तो अपनों के विश्वास को मारा है।” 10 साल की बेटी के मुंह से निकले थे शब्द। इन शब्दों ने मेरे अंदर को झिंझोड़ दिया और मुझे मेरे पुराने दिनों की ओर धकेल दिया।

एक ही भाई जिसपे पूरा घर अपनी जान देता था। ना उसने पढ़ाई की, ना ही कहीं वो सेट हो पाया, जीवन भर भटकता रहा अमीर बनने के लिए। उसे मेरा हमेशा साथ मिला। मैंने अपना घर मम्मी के पास में ही ले लिया था जैसे मैं बेटा बनकर उसकी देखभाल कर सकूँ। पापा को हमने बचपन में ही खो दिया था। सब कुछ ठीक ही तो था। भाई भाभी के दो बच्चे, हमारी दो बेटियां, आपसी प्यार और विश्वास। फिर अचानक ऐसा क्या हो गया जो सब कुछ बदल गया। मेरी माँ को अपनी बहू याने मेरी भाभी और उसके घर वाले शुरुआत से ही कम पसंद थे। बेटे की पसंद के आगे मजबूरीवश उन्होंने सिर झुकाया था। उसे सदैव यही डर सताता कि उसकी आजीवन मेहनत की कमाई बेटे के ससुराल वाले डुबो देंगे। बेटा भी बहुत जल्द अमीर बनना चाहता था, उसके ऊँचे उड़ने के खबाबों ने मेरी माँ की सेहत को बहुत नीचे ला दिया था। मकान के दस्तावेज मांगने, बेटियों से रिश्ता कम करने जैसी बेटे की मांगों के आगे एक मां ने अचानक घुटकर दम तोड़ दिया। हर कोई टूट गया! लेकिन कहते हैं ना, बाप बड़ा न भैया, the whole thing is that सब से बड़ा रूपैया। कुछ ही दिनों में माँ का गम बेटा और सगे संबंधी सब भूल गये। पहले कहते थे, काश लड़कियां न जन्में पर मुझे अहसास हो गया था कि काश इस ज़माने में लड़का न जन्मे। बेटियां बेटों से बहुत अच्छी होती हैं, कम से कम वे अपने मां बाप को, बहन को धोखा तो नहीं देती। मेरे विचार मुझे उस दिन की घटना की तरफ ले गये जब मौसी समान मेरी माँ को फ्रेक्चर हुआ था। सच कहूँ तो हम भाई बहनों को यशोदा मैया की तरह जिसने पाल पोसकर बड़ा किया था उसी माँ से मेरे भाई और भाभी ने बिल्कुल किनारा कर लिया था। मेरी सगी माँ की मृत्यु पश्चात भाई भाभी को जल्दी थी कि अब कैसे मकान के दस्तावेज हथिया कर मकान उनके नाम हो जाये, इसलिए उन्होंने शतरंज की चाल चलनी शुरू की। मेरी माँ के साथ की हुई बातें मोबाइल में रिकॉर्ड कर ली गईं। बातें थी परिवार के दुख की, जिसमें ज़िकर था भाई भाभी मकान के कागज ले जाएंगे। इन अंगत बातों को रिकॉर्ड कर मुझे फँसाने का और माँ समान मौसी को घर से बाहर निकालने का खेल शुरू हुआ। माँ को न चाय मिली न खाना, ऐसी हालत में मेरे पास उसे अपने पास ले आने के सिवा कोई चारा नहीं था। जिस घर में उसने अपनी पूरी जिंदगी बिताई थी, उसी घर से उसे खाली हाथ निकलना पड़ा। हमारे समाज में बेटी के घर का पानी भी नहीं पिया जाता, ऐसी हालत में उसे मेरे घर में रहने से जो तकलीफ उसे हो रही थी वो मैं भली भांति समझ रही थी। वो जीते-जी मर रही थी पर हम उसे समझा रहे थे क्यूंकि एक माँ में खो चुकी थी, अब दूसरी माँ को खोने की हालत में मैं नहीं थी। एक चाल कामयाब होने के बाद शतरंज का दूसरा मोहरा चला मेरे भाई ने।

भाई के मोबाइल की रिंग ने मुझे एक पल के लिए यह सोचने को मजबूर किया कि शायद उसे अपनी गलती का अहसास हो गया है उसने माफी मांगने के लिए फोन किया होगा। पर जैसे ही मैंने फोन पिक किया मुझे समझ आ गया कि वो अब हमारा नहीं है। उसने माँ के लिए नहीं पूछा, पर कहा मेरे बेटे की किताब रह गई है, तो तुम घर आके निचले मकान का ताला खोलकर दो, तो हम वो उठा लें। मैंने फोन रख दिया। दिन में उसके चार फोन आये। आखिर शाम को दफतर से लौटने के बाद मैं भाई के घर उन्हें किताबें देने गई। अचानक भाभी और उसके बेटे ने मेरे हाथ से चाबी छीन ली और चिल्लाने लगे। मैं

जैसे-तैसे वहां से भागी, कुछ ही देर में मेरे भाई का फोन आया तुमने मेरी बीवी को फिनाइल पिला दिया है। मेरे और मेरे पति के काटो तो खून नहीं। ये चाल मेरे भाई की साली ने खेली थी जो पेशे से सहायक नर्स थी उसे पता था क्या करना है जिससे हम लोग फंस सकते हैं। हमें धमकी दी गई अगर तुम लोग दस्तावेज सही करके देते हो तो हम तुम पर केस नहीं करेंगे नहीं तो तुम पर अटेम्प्ट टू मर्डर का केस दर्ज करेंगे। मेरा परिवार डर गया और दूसरे दिन ही दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने के लिए उनके पास गयी। वहां भी भाई की साली द्वारा गालियां, धमकियां मिलीं और सगा भाई चुपचाप सब देखता रहा। उस दिन अहसास हुआ वाकई हम कलजुग में आ गये हैं। जहां भाई बहन, रिश्ते नाते सब बेमानी हैं। मेरी स्वर्गीय मां को शायद ये मंजूर नहीं था, इसलिए कानूनी अङ्गठनों के चलते दस्तावेज भाई भाभी के नाम हो न पाये। उनकी सारी चालें धरी की धरी रह गई। उसके बाद कोरोना महामारी ने पूरे देश को अपने जाल में फांस दिया। सब कुछ रुक गया। लेकिन जो चीज़ नहीं रुकी वो थी भाई-भाभी की ईर्ष्या। जल्न इस बात की कि एक मां ने बेटे से ज्यादा बेटी को क्यूँ प्यार किया है। इस द्वेष की वजह से उन्होंने पुलिस में गलत शिकायत दर्ज करवाई मेरे पूरे परिवार के खिलाफ। एक 70 साल की बूढ़ी मां के खिलाफ, मेरे पति के खिलाफ, मेरी बहन के खिलाफ, बहनोई के खिलाफ। हम कमजोर थे इसलिए हमें पुलिस के नाम से डराने की कोशिश की गई, पर कहते हैं ना सच्चाई परेशान हो सकती है, हार नहीं सकती। हमने फैसला किया गलत बातों के खिलाफ लड़ने का। पुलिस, कोर्ट कचहरी जिस नाम से डर लगता था आज उसकी आदत हो गई। बेटी मां के हक के लिए लड़ रही है, पता नहीं आगे क्या होगा?

“मां, मेरे मामा कंस मामा है ना”

“हां बेटा !” मेरे मुंह से अनायास ही निकल गया और मैं अपने विचारों से बाहर आ गई।

नव वर्ष

नव वर्ष दो हजार इक्कीस में,
मेरे दिल की है इतनी ही चाह,
मिले हर भारतवासी को,
बस एक नेकी की राह।

मिटे लालच मन का,
और छूटे झूठा अहंकार,
मेरे देश का हर भारतवासी,
करे सब्र और संतोष को इछित्यार।

जागे ज्योति सच्चाई की,
और मिटे मन का हर विकार,
काबू पाकर अपने मन पे,
हो हर कोई बस ईमानदार।

छूटे रिश्वतखोरी,
और मिटे देश से भ्रष्टाचार,
मेरे देश की हो तरकी,
हर जगह हो मेरे भारत की जय जयकार।

शांति रहे सारे जग में,
और मिटे नफरतों की दीवार,
हो भाईचारा पूरे विश्व में,
न हो किसी का किसी से कोई तकरार।

इंसाफ हो हर नारी से,
न जुल्म हो उस पर बार-बार
मिले उसको सुरक्षा,
न हो किसी के आगे अब वो शर्मसार।

हर कोई अपना फर्ज पहचाने,
और करे खुद से इक इकरार,
परदेशी भाषा के संग-संग,
करे अपनी भाषा और संस्कृति से भी प्यार।

कोरोना से मिले सबको मुक्ति,
न किसी और मुसीबत से हो साक्षात्कार,
लौट आए त्यौहारों की फिर से मस्ती,
नव वर्ष लेकर आए खुशियाँ अपार ॥



श्रीमती ज्योति एन. भावनानी
सहायक
सामान्य प्रशासन विभाग





भ्रगवती निवास

श्रीमती संगीता खिल्वानी
सहायक, सिविल अभियांत्रिकी विभाग

बच्चों को स्कूल बस में बैठाकर वापस आ शालू खिन्न मन से टैरेस पर जाकर बैठ गई।

सुहावना मौसम, हल्के बादल और पक्षियों का मधुर गान कुछ भी उसके मन को वह सुकून नहीं दे पा रहे थे, जो वो अपने पिछले शहर के घर में छोड़ आई थी।

शालू की इधर-उधर दौड़ती सरसरी नज़रें थोड़ी दूर एक पेड़ की ओट में खड़ी बुढ़िया पर ठहर गई।

‘ओह ! फिर वही बुढ़िया, क्यों इस तरह से उसके घर की ओर ताकती है ?’’ इससे पहले भी शालू उस बुढ़िया को तीन-चार बार नोटिस कर चुकी थी।

दो महीने हो गए थे शालू को पूना से गुड़गांव शिफ्ट हुए, मगर अभी तक एडजस्ट नहीं हो पाई थी।

पति सुधीर का बड़े ही शॉर्ट नोटिस पर तबादला हुआ था, वो तो आते ही अपने काम और ऑफिशियल टूर में व्यस्त हो गए। छोटी शैली का तो पहली क्लास में आराम से एडमिशन हो गया, मगर सोनू को बड़ी मुश्किल से पांचवीं क्लास के मिड सेशन में एडमिशन मिला, वो दोनों भी धीरे-धीरे रुटीन में आ रहे थे।

लेकिन शालू, उसकी स्थिति तो जड़ से उखाइकर दूसरी ज़मीन पर रोपे गए पेड़ जैसी हो गई थी, जो अभी भी नई ज़मीन नहीं पकड़ पा रहा था।

सब कुछ कितना सुव्यवस्थित चल रहा था पूना में, उसकी अच्छी जॉब थी। घर संभालने के लिए अच्छी मेड थी, जिसके भरोसे वह घर और रसोई छोड़कर सुकून से ऑफिस चली जाती थी। घर के पास ही बच्चों के लिए एक अच्छा-सा डे केयर भी था। स्कूल के बाद दोनों बच्चे शाम को उसके ऑफिस से लौटने तक वहीं रहते। लाइफ बिल्कुल सेट थी, मगर सुधीर के एक तबादले की वजह से सब गड़बड़ हो गया।

यहां न आस-पास कोई अच्छा डे केयर है और पता नहीं अच्छी मेड भी कब मिलेगी ? इतनी टेंशन के बीच ये विचित्र बुढ़िया। कहीं छुपकर घर की टोह तो नहीं ले रही ? वैसे भी इस इलाके में चोरी और फिरोती के लिए बच्चों का अपहरण कोई नई बात नहीं है। सोचते-सोचते शालू परेशान हो उठी।

दो दिन बाद सुधीर टूर से वापस आए, तो शालू ने उस बुढ़िया के बारे में बताया, सुधीर को भी कुछ चिंता हुई, “ठीक है, अगली बार कुछ ऐसा हो, तो वॉचमैन को बोलना वो उसका ध्यान रखेगा, वरना फिर देखते हैं, पुलिस कम्प्लेन कर सकते हैं,” कुछ दिन ऐसे ही गुजर गए।

शालू का घर तो दोबारा ढरें पर लाकर नौकरी करने का संघर्ष जारी था, पर इससे बाहर आने की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी।

एक दिन सुबह शालू ने टैरेस से देखा, वॉचमैन उस बुढ़िया के साथ उनके मेन गेट पर आया हुआ था। शालू को लगा उसने यह चेहरा कहीं और भी देखा है, मगर कुछ याद नहीं आ रहा सुधीर घर आने से पहले दोनों से बात करके आया।

“अरे, ये तो वही बुढ़िया है, जिसके बारे में मैंने आपको बताया था, ये यहां क्यों आई है ?” शालू ने चिंतित स्वर में सुधीर से पूछा।

“बताऊंगा तो आश्चर्यचकित रह जाओगी। जैसा तुम उसके बारे में सोच रही थी। वैसा कुछ भी नहीं है। जानती हो वो कौन है ?”

“वो इस घर की पुरानी मालकिन है।”

“तो क्या, ये मिस्टर शांतनु की माँ है ?

हाँ, पहले धोखे से सब कुछ अपने नाम करा लिया और फिर ये घर हमें बेचकर विदेश चला गया, अपनी बूढ़ी मां भगवती देवी को एक वृद्धाश्रम में छोड़कर।

छि:...कितना कमीना इंसान है, देखने में तो बड़ा शरीफ लग रहा था।''

हाँ, याद आया, स्टोर रूम की सफाई करते हुए इस घर की पुरानी नेमप्लेट दिखी थी। उस पर ''भगवती निवास'' लिखा था, वहीं एक राजसी ठाठ-बाट वाली महिला की एक पुरानी फ़ोटो भी थी। उसका चेहरा ही इस बुढ़िया से मिलता था, तभी मुझे लगा था कि इसे कहीं देखा है, मगर अब ये यहाँ क्यों आई है?

आज इनके पति की पहली बरसी है। ये उस कमरे में दिया जलाकर प्रार्थना करना चाहती है, जहाँ उन्होंने अंतिम सांस ली थी।''

''इससे क्या होगा, मुझे तो इन बातों में कोई विश्वास नहीं।''

''तुम्हें न सही, उन्हें तो है और अगर हमारी हाँ से उन्हें थोड़ी-सी खुशी मिल जाती है। तो हमारा क्या घट जाएगा?''

''ठीक है, आप उन्हें बुला लीजिए।''

भगवती देवी ने अंदर आकर उन्होंने सुधीर और शालू को ढेरों आशीर्वाद दिए।

नजरें भर-भरकर उस पराये घर को देख रही थीं, जो कभी उनका अपना था। आँखों में कितनी स्मृतियां, कितने सुख और कितने ही दुख एक साथ तैर आए थे।

वो ऊपरवाले कमरे में गई। कुछ देर आंखे बंद कर बैठी रहीं। बंद आंखें लगातार रिस रही थीं।

फिर उन्होंने दिया जलाया, प्रार्थना की ओर फिर वापस से दोनों को आशीर्वाद देते हुए कहने लगीं। ''मैं इस घर में दुल्हन बनकर आई थी। सोचा था, अर्थी पर ही जाऊंगी, मगर...'' स्वर भरा आया था।

शालू और सुधीर निःशब्द बैठे रहे। थोड़ी देर घर से जुड़ी बातें कर भगवती देवी भारी कदमों से उठीं और चलने लगीं।

आप जरा बैठिए, मैं अभी आती हूँ। ''शालू, भगवती देवी को रोककर कमरे से बाहर चली गई और इशारे से सुधीर को भी बाहर बुलाकर कहने लगी। ''सुनिए'' मुझे एक बड़ा अच्छा आइडिया आया है, जिससे हमारी लाइफ भी सुधर जाएगी और इनके दूटे दिल को भी आराम मिल जाएगा।

क्यों न हम इन्हें यहीं रख लें? अकेली हैं, बेसहारा हैं और इस घर में इनकी जान बरसी है यहाँ से कहीं जाएंगी भी नहीं और हम यहाँ वृद्धाश्रम से अच्छा ही खाने-पहनने को देंगे उन्हें।''

''तुम्हारा मतलब है, नौकर की तरह?''

''नहीं, नहीं, नौकर की तरह नहीं, हम इन्हें कोई तनख्वाह नहीं देंगे। काम के लिए तो मेड भी है। बस, ये घर पर रहेंगी तो घर के आदमी की तरह मेड पर, आने-जानेवालों पर नज़र रख सकेंगी। बच्चों को भी देख-संभाल सकेंगी।

ये घर पर रहेंगी, तो मैं भी आराम से नौकरी पर जा सकूँगी।

''आइडिया तो अच्छा है, पर क्या ये मान जाएंगी?''

''क्यों नहीं, हम इन्हें उस घर में रहने का मौका दे रहे हैं, जिसमें उनके प्राण बसे हैं, जिसे ये छुप-छुपकर देखा करती हैं।

''ठीक है, तुम बात करके देखो, ''सुधीर ने सहमति जताई।

शालू ने संभलकर बोलना शुरू किया, ''देखिए, अगर आप चाहें, तो यहाँ रह सकती हैं।''

क्या वाकई मैं इस घर में रह सकती हूँ? नहीं, नहीं, आपको नाहक ही परेशानी होगी।''

''परेशानी कैसी, इतना बड़ा घर है और आपके रहने से हमें भी आराम हो जाएगा।'' ''वो मान गई। घर की जिम्मेदारी से बेफिक्र होकर शालू ने भी नौकरी ज्वॉइन कर ली। साल भर कैसे बीत गया, पता ही नहीं चला।

अम्मा सुबह दोनों बच्चों को उठार्ती, तैयार करतीं, मान-मनुहार कर खिलार्तीं और स्कूल बस तक छोड़तीं। फिर किसी कुशल प्रबंधक की तरह अपनी देखरेख में बाई से सारा काम कराती। रसोई का वो स्वयं खास ध्यान रखने लगीं, खासकर बच्चों के स्कूल से आने के बाद वो नित नए स्वादिष्ट और पौष्टिक व्यंजन तैयार कर देती।

शालू भी हैरान थी कि जो बच्चे चिप्स और पिज़्जा के अलावा कुछ भी मन से न खाते थे, वे उनके बनाए व्यंजन खुशी-खुशी खाने लगे थे।

बच्चे अम्मा से बेहद घुल-मिल गए थे, उनकी कहानियों के लालच में कभी देर तक टीवी से चिपके रहनेवाले बच्चे

उनकी हर बात मानने लगे। समय से खाना-पीना और होमवर्क निपटाकर बिस्तर में पहुंच जाते।

अम्मा अपनी कहानियों से बच्चों में एक ओर जहां अच्छे संस्कार डाल रही थीं, वहीं हर वक्त टीवी देखने की बुरी आदत से भी दूर ले जा रही थीं।

शालू और सुधीर बच्चों में आए सुखद परिवर्तन को देकर अभिभूत थे। क्योंकि, उन दोनों के पास तो कभी बच्चों के पास बैठ बातें करने का भी समय नहीं होता था।

पहली बार शालू ने महसूस किया कि घर में किसी बड़े-बुजुर्ग की उपस्थिति, नानी-दादी का प्यार, बच्चों पर कितना सकारात्मक प्रभाव डालता है। उसके बच्चे तो शुरू से ही इस सुख से वंचित रहे, क्योंकि उनके जन्म से पहले ही उनकी नानी और दादी दोनों गुजर चुकी थीं।

आज शालू का जन्मदिन था। सुधीर और शालू ने ऑफिस से थोड़ा जल्दी निकलकर बाहर डिनर करने का प्लान बनाया था। सोचा था, बच्चों को अम्मा संभाल लेंगी।

मगर घर में घुसते ही दोनों हैरान रह गए। बच्चों ने घर को गुब्बारों और झालरों से सजाया हुआ था। वहीं अम्मा ने शालू की मनपसंद डिशेज और केक बनाए हुए थे। इस सरप्राइज बर्थडे पार्टी, बच्चों के उत्साह और अम्मा की मेहनत से शालू अभिभूत हो उठी और उसकी आंखें भर आई। बच्चे दौड़कर शालू के पास आ गए और जन्मदिन की बधाई देते हुए पूछा, आपको हमारा सरप्राइज कैसा लगा?''

“बहुत अच्छा, इतना अच्छा, इतना अच्छा...कि क्या बताऊं...” कहते हुए उसने बच्चों को बांहों में भरकर चूम लिया।

“हमें पता था आपको अच्छा लगेगा। अम्मा ने बताया कि बच्ची द्वारा किया गया छोटा-सा प्रयास भी मम्मी-पापा को बहुत बड़ी खुशी देता है, इसीलिए हमने आपको खुशी देने के लिए ये सब किया।”

शालू की आंखों में अम्मा के लिए कृतज्ञता छा गई। बच्चों से ऐसा सुख तो उसे पहली बार ही मिला था और वो भी उन्हीं के संस्कारों के कारण।

केक कटने के बाद भगवती देवी ने अपने पल्लू में बंधी लाल रुमाल से लिपटी एक भेंट शालू को दी।

“ये क्या है अम्मा?”

“तुम्हारे जन्मदिन का उपहार।”

शालू ने खोलकर देखा तो रुमाल में सोने की चेन थी।

वो चौंक पड़ी, “ये तो सोने की मालूम होती है।”

“हाँ बेटी, सोने की ही है, बहुत मन था कि तुम्हारे जन्मदिन पर तुम्हें कोई तोहफा दूँ। कुछ और तो नहीं है मेरे पास, बस यही एक चेन है, जिसे संभालकर रखा था। मैं अब इसका क्या करूँगी। तुम पहनना, तुम पर बहुत अच्छी लगेगी।

“नहीं, नहीं अम्मा, मैं इसे नहीं ले सकती।” आपका आपका आशीर्वाद ही बहुत है मेरे लिए।

“ले ले बेटी, एक मां का आशीर्वाद समझकर रख ले। मेरी तो उम्र भी हो चली। क्या पता तेरे अगले जन्मदिन पर तुझे कुछ देने के लिए मैं रहूँ भी या नहीं।”

“नहीं अम्मा, ऐसा मत कहिए, ईश्वर आपका साया हमारे सिर पर सदा बनाए रखे।” कहकर शालू उनसे ऐसे लिपट गई, जैसे बरसों बाद कोई बिछड़ी बेटी अपनी मां से मिल रही हो।

घर की बड़ी, आदरणीय, एक मां के रूप में, जिसकी गवाही उस घर के बाहर लगाई, गई वो पुरानी नेमप्लेट भी दे रही थी, जिस पर लिखा था “भगवती निवास”।

यदि आपकी आंखें इस कहानी को पढ़कर थोड़ी-सी भी नम हो गई हों तो अकेले में 2 मिनट चिंतन करें कि पाश्चात्य संस्कृति की होड़ में हम अपनी मूल संस्कृति को भुलाकर, बच्चों की उच्च शिक्षा पर तो सभी का ध्यान केंद्रित है किन्तु उन्हें संस्कारवान बनाने में हम पिछड़ते जा रहे हैं।

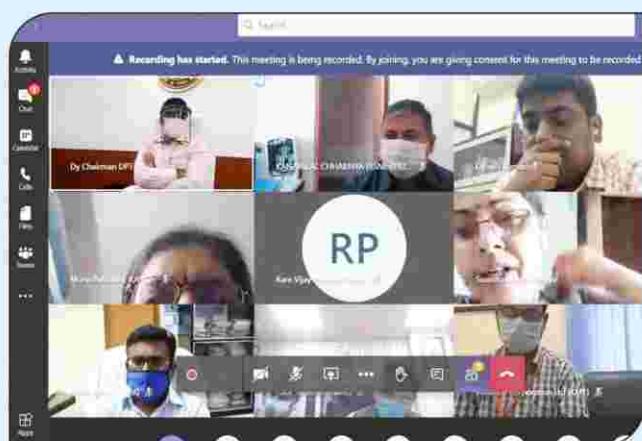
संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ



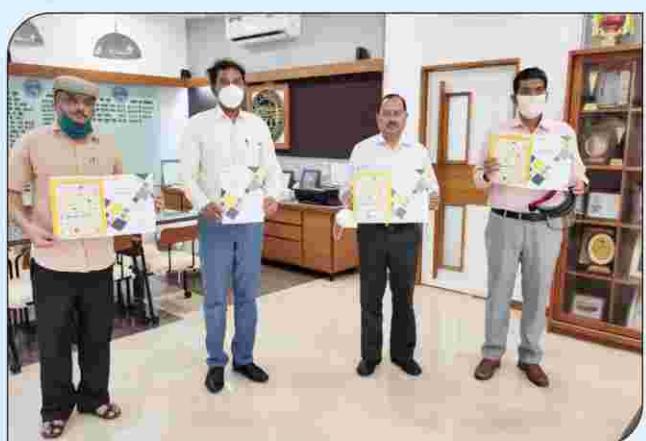
दिनांक 15 अगस्त 2020 को आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह पर ध्वजारोहण करते हुए दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री एस. के. मेहता, भा.व.से.।



दिनांक 15 अगस्त 2020 को आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह का एक अन्य दृश्य



दिनांक 31 अगस्त 2020 को दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस. की अध्यक्षता में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ऑनलाइन बैठक का दृश्य।



नराकास की वार्षिक हिंदी पत्रिका "कंडला नराकास संवाहिका" के दूसरे अंक का लोकार्पण करते हुए दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री एस.के.मेहता, भा.व.से. एवं उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस.।



दिनांक 14 सितंबर 2020 को हिंदी पखवाड़ा के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित दीनदयाल पोर्ट के उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस. एवं विभागप्रमुखगण।



दिनांक 14 सितंबर 2020 को हिंदी पखवाड़ा के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित दीनदयाल पोर्ट के उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस. संबोधित करते हुए।

संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ



स्वच्छता पखवाड़ा 2021 के उद्घाटन दिवस पर वृक्षारोपण करते हुए
दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के लेबर ट्रस्टी श्री एल. सत्यनारायण



दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट में मनाए गए
स्वच्छता पखवाड़ा 2021 की एक अन्य झलक ।



दिनांक 30 सितंबर 2020 को दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस. की अध्यक्षता में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का दृश्य ।



दिनांक 30 सितंबर 2020 को 124 टन क्षमता वाली दो लीभर एलएचएम 550 मॉडल एच.एम. क्रेनों के प्रचालन का शुभारंभ करते हुए दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस. ।



माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के आहवान पर 'कोविड-19 पर जन आंदोलन अभियान' के तहत दिनांक 09 अक्टूबर 2020 को दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री एस.के.मेहता, भा.व.से. पोर्ट के अधिकारियों व कर्मचारियों को शपथ दिलाते हुए ।

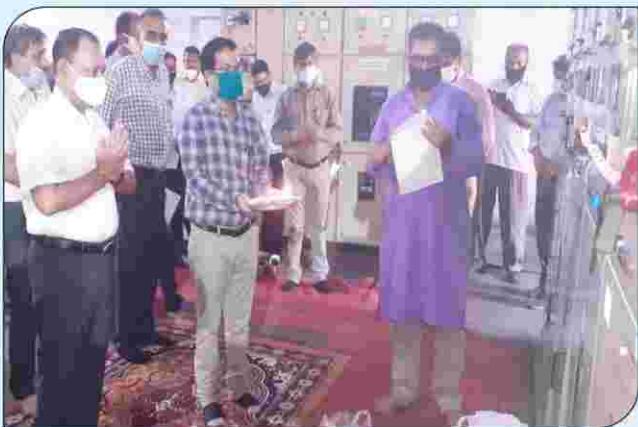


माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के आहवान पर 'कोविड-19 पर जन आंदोलन अभियान' के तहत दिनांक 09 अक्टूबर 2020 को दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री एस.के.मेहता, भा.व.से. पोर्ट के अधिकारियों व कर्मचारियों को शपथ दिलाते हुए - एक अन्य दृश्य ।

संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ



दिनांक 30 सितंबर 2020 को स्क्रैप बार्ज से डेडीकेटेड ऑयल पोल्यूशन बार्ज में परिवर्तित एम.एल.करिश्मा बार्ज के सेवार्पण समारोह में उपस्थित दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस. के साथ लेबर ट्रस्टी एवं अधिकारीगण।



दिनांक 17 अक्टूबर 2020 को एसआईपीसी के लिए 11 केवी लाइन का उद्घाटन करते हुए दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री एस.के.मेहता, भा.व.से.।



दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट में दिनांक 27 अक्टूबर 2020 से सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन आरंभ हुआ जिसके तहत पोर्ट के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा 'सत्यनिष्ठा शपथ' ली गई।



दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट में दिनांक 29 अक्टूबर 2020 को उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल, आईआरटीएस एवं अन्य अधिकारीगणों की उपस्थिति में पीसीओएम-पश्चिम रेलवे श्री शेलेंड्र कुमार, आईआरटीएस, वाहनचालकों के सुरक्षा प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन करते हुए।



दिनांक 31 अक्टूबर 2020 को सरदार पटेल की जयंती राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर मंत्रालय द्वारा आयोजित शपथ ग्रहण कार्यक्रम में भाग लेते हुए दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री एस.के.मेहता, उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल, विभाग प्रमुखगण और वरिष्ठ अधिकारीगण।

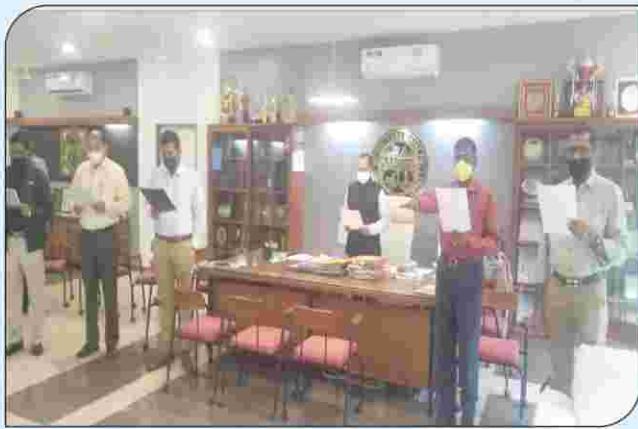


दिनांक 31 अक्टूबर 2020 को सरदार पटेल की जयंती राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर शपथ लेते हुए कर्मचारीगण।

संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ



दिनांक 13 नवंबर 2020 को नवीनतम परिष्कृत सुरक्षा प्रणाली से युक्त 10 एमवीए क्षमता वाले पॉवर ट्रांसफार्मर का उद्घाटन करते हुए दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल, आईआरटीएस।



दिनांक 26 नवंबर 2020 को संविधान दिवस के अवसर पर अध्यक्ष श्री एस.के.मेहता, उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल, विभाग प्रमुखगण और वरिष्ठ अधिकारीगण संविधान की प्रस्तावना पढ़ते हुए।



दिनांक 01 दिसंबर 2020 को विश्व एड्स दिवस के अवसर पर अधिष्ठापित स्टॉल पर दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री एस. के. मेहता, उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल और अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।



दिनांक 23 दिसंबर 2020 को दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट में अध्यक्ष श्री एस.के.मेहता, भा.व.से. की अध्यक्षता में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का दृश्य।



दिनांक 23 दिसंबर 2020 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक के दौरान पोर्ट की छमाही हिंदी गृह पत्रिका 'लहरों का राजहंस' के 19 वें अंक का विमोचन करते हुए अध्यक्ष श्री एस. के. मेहता, भा.व.से।



पोर्ट की छमाही हिंदी गृह पत्रिका 'लहरों का राजहंस' के ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित 19 वें अंक की एक झलक।



आत्मविश्वास



श्रीमती इला वेदांत

कनिष्ठ लिपिक
नगर विकास स्कंध

“हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब, एक दिन, मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास..., हम होंगे कामयाब एक दिन”

उपरोक्त पंक्तियों में सुखी, सफल एवं संतुष्ट जीवन का रहस्य छुपा हुआ है।

अपने-जीवन में हर एक व्यक्ति को अपने कार्यक्षेत्र में अपने कर्तव्य निभाने होते हैं। बाल्यकाल से ही हमारे जीवन में हर दिन कुछ नया सीखने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। छोटा बच्चा जब चलना सीखता है तो धीरे धीरे हर दिन डग भरता है। वह बहुत बार गिरने के बाद भी अपने प्रयत्न चालू रखता है। यह उसका आत्मविश्वास ही है जो उसे हिम्मत देता है।

हम अपने जीवन में अनेक परिस्थितियों से गुजरते हैं। परिस्थितियाँ हर बार एक-सी नहीं होतीं। कई बार स्थितियाँ सामान्य होती हैं तो कई बार कठिन। संयोग चाहे जैसे भी हों, हमें उन्हें पार करना ही होता है। ऐसी स्थिति में विपरीत परिस्थितियों से डर कर भागना, यह कोई हल नहीं होता। ऐसे में स्वयं पर विश्वास रख कर उसे पूरा करना चाहिए। इसलिए हमें पूरे आत्मविश्वास के साथ अपना कर्तव्य करते हुए समस्या का हल निकालना है। हमें अपने आप में आत्मविश्वास जगाना होगा। यदि मन में पूर्ण विश्वास है कि हम इस कार्य को पूर्ण कर सकेंगे तो इस स्थिति को अवश्य पार कर सकेंगे।

न केवल निजी जीवन में किन्तु हमारे कार्यक्षेत्र में भी आत्मविश्वासी होना आवश्यक है। स्वयं पर विश्वास हमें संयम, शिष्टता एवं निःरता देता है। कार्यालयीन जीवन में भी आत्मविश्वास हमारी कार्यशैली को प्रभावशाली बनाता है। यदि हमें स्वयं पर विश्वास है तो हम संतोषपूर्ण जीवन जी सकते हैं, क्योंकि आत्मविश्वास के कारण हम विपरीत स्थितियों में विचलित नहीं होते हैं और गलत रास्तों पे चलने से बच जाते हैं।

आत्मविश्वास हमें भ्रष्टाचार से बचाता है। क्यूंकि जिस व्यक्ति के मन में विश्वास है वह अपने आपको संतुष्ट रख सकता है और बिना कोई गलत काम किये अपने लक्ष्य को पा सकता है। अतः आत्मविश्वास ही संतुष्ट एवं सफल जीवन की कुंजी है।

याथी



हर दिन साथ रहता है वो साथी,
आसू बनकर आंखों से बहता है वो साथी,
उस लम्हे को याद करता है वो साथी,
हर पल साथ रहता है वो साथी,

हर वक्त साथ गुजारता है वो साथी,
पास न होने से अकेलापन महसूस करता है वो साथी,
जीवन जीने की कला सिखाता है वो साथी,
सिखाने के बाद बहुत रुलाता है वो साथी,
एक दिन बिछड़ जाता है वो साथी,
बिछड़ने के बाद बहुत ‘याद’ आता है वो साथी...



सुश्री मोनिका लोहचानी
डेटा इंट्री ऑपरेटर, ईडीपी



परिवर्तन - प्रकृति का एक अटूट नियम

क. प्रतीक भावनानी
सुपुत्र श्रीमती ज्योति एन. भावनानी,
सहायक, सा. प्र. विभाग

प्रकृति का एक अटूट नियम है परिवर्तन, जो कि समय की सबसे बड़ी विशेषता है। यहाँ सृष्टि में, कभी भी समय एक जैसा नहीं रहा है। इसलिए मानव जीवन भी कभी एक जैसा नहीं रहा है क्योंकि समय और मानव जीवन का आपस में बहुत ही गहरा सम्बन्ध है। समय का पहिया बड़ी तेज़ी से घूमता रहता है और उसी के साथ मानव जीवन भी गतिशील बना रहता है। समय के परिवर्तन के साथ मानव जीवन भी परिवर्तित होता रहता है।

इस पृथ्वी पर गर्मी की ऋतु के बाद बारिश एवं सर्दी का आना, पतझड़ के बाद सावन का आना, अमावस्या के अंधकार के बाद पूनम के चाँद का रौशन होना, रात के तिमिर के बाद दिन के उजाले का होना निश्चित है। प्रकृति के इस तरह के परिवर्तनों का अनुभव मानव जीवन को अलग-अलग तरह के एहसास कराता है।

इतिहास भी इस बात का गवाह है कि इस धरती पर अलग-अलग राजाओं का शासन चला है। परन्तु समय बदलने पर उनके राजवंश और सिंहासन मिट्टी में मिल गए। कभी भी किसी राजा का शासन स्थायी नहीं रह पाया है। इसी तरह से सदियों तक गुलाम रहनेवाला भारत आज आजादी में खुलकर साँस ले रहा है। राजनीति के क्षेत्र में भी देखा जाए तो, कभी भी एक जैसा शासन नहीं रहता है। शासक पार्टियाँ बदलती रहती हैं और हर शासन काल में जन-जीवन को अलग-अलग तरह के अनुभव प्राप्त होते रहे हैं। बड़े-बड़े व्यापारी, बड़ी-बड़ी फिल्मी कम्पनियाँ जो खूब कमाती हैं और जिनका बड़ा ही नाम होता है, अचानक वो गायब हो जाती हैं। इसी तरह से कितने ही लोकप्रियता के शिखर पर बैठे कलाकार, अभिनेता, कवि, इत्यादि अचानक से गुमनामी के अंधेरे में खो जाते हैं तो कभी नए-नए कलाकार, अभिनेता एवं व्यवसायी, समय का साथ मिलने पर प्रसिद्ध होकर समृद्धि के शिखर पर बैठे दिखाई देते हैं।

इस तरह मानव जीवन में अच्छे और बुरे दिनों की आँख मिचौली चलती ही रहती है। अच्छे दिनों का बुरे दिनों में बदलना और बुरे दिनों का अच्छे दिनों में बदलना, मानव जाति को बहुत कुछ सिखा जाता है। समय की परिवर्तनशीलता हमें यह संदेश देती है कि आपत्तिकाल में हमें घबराना नहीं चाहिए और सुख के दिनों में इतराना नहीं चाहिए। हर तरह के समय के साथ अपने आप को परिवर्तित करने की कला हर मानव में होनी चाहिए और आज के समय में यह बिलकुल अनिवार्य भी है।

माना कि आज का समय पूरे ही विश्व के लिए एक चुनौती भरा समय है जिसमें तेज रफ्तार से दौड़ती और आगे बढ़ती हुई जिन्दगी को जैसे एक ब्रेक सी लग गई है जब आज कोरोना की विश्व महामारी ने लगभग सारी दुनिया को अपने शिकन्जे में कस लिया है। कोरोना वाईरस की यह बीमारी एक प्रकोप बनकर सारे देशों की अर्थव्यवस्था को तहस-नहस किये जा रही है। इसकी बजह से अचानक ही राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार के क्षेत्र में बहुत ही खराब असर पड़ा है। कितने ही लोग इस महामारी की चपेट में आ चुके हैं और न जाने कितने ही लोग अपनी जानें गँवा चुके हैं और तो और कितने ही डॉक्टर तथा पुलिसकर्मी भी लोगों को इस महामारी से बचाने हेतु अपने फर्ज को पूरा करते हुए अपनी जानें गवा चुके हैं जो कि बेहद ही दुख की बात है। सामान्य जन-जीवन पर भी इसका बुरा असर पड़ा है। लोग एक दूसरे से दूर होते चले गए हैं। हमारे देश की शोभा हमारे राष्ट्रीय पर्व भी इस महामारी की बजह से मनाने बंद हो गए हैं और आनेवाले समय में आने वाले त्योहारों को मनाने की कोई उम्मीद नज़र नहीं आ रही है। हर तरफ एक डर का माहौल दिख रहा है। लोगों की हँसी और मुस्कानें जैसे फीकी पड़ गई हैं। बच्चों की पढ़ाई पर भी इसका बेहद ही बुरा असर पड़ा है। और तो और, शायद यह पहली बार ही होगा जब ईश्वर ने भी मानव जाति के लिए अपने दरवाजे बन्द कर दिए जो कि हमारे लिए बेहद ही दुःख की बात है।

परन्तु अगर इस महामारी का दूसरा रूप देखा जाए तो उसमें प्रकृति ने मानव जाति को इस महामारी से बचने के तरीके भी सुझाए हैं और इससे लड़ने के लिए तैयार भी किया है। प्रकृति के नियम के अनुसार यह बुरा वक्त आया है वो इसका टलना भी निश्चित ही है। जरूरत है तो धैर्य रखने की, सकारात्मक सोच की - मन में हिम्मत रखने की, सावधानियाँ बरतने की जो कि समय समय पर सरकार, विभिन्न डॉक्टरों, समाज सेवी संस्थाओं तथा जागरूक जनता द्वारा संचार के विभिन्न साधनों के माध्यम से हमें समझाई जा रही है तथा सरकारी निर्देशों का पालन करने की, अपनी इम्युनिटी बढ़ाने की, सर्दी-खाँसी बाली चीजों से परहेज रखने की तथा आवश्यकता पड़ने पर तुरंत ही डॉक्टर से परामर्श करने की, जिनके अमल से कुछ हद तक इस बीमारी से खुद को बचाया जा सकता है, महामारी से बचने के लिए वैक्सीन टीका भी लगवाना बहुत जरूरी हो गया है। अपनी बारी में टीका लगाकर बचाव का रास्ता अपनाना चाहिए, साथ ही कोविड प्रॉटोकॉल का सभी को पालन करना जरूरी है।



पुस्तक



वाह री पुस्तक,
तू है महान।
क्या-क्या करूँ तेरा,
मैं गुणगान।

क्या नहीं सिखाया,
इसने मुझको।
क्या नहीं दिखाया,
तूने मुझको।

बचपन से दिया साथ,
तूने मुझको।
अभी तक थामे रखा है,
तूने मुझको।

विज्ञान, गणित और समाजशास्त्र का,
ज्ञान दिया तूने मुझको।
अपनी प्राचीन संस्कृति,
सभ्यता और कला का,
भान कराया तूने मुझको।

अपनी भाषा और राष्ट्रीय भाषा से,
परिचित कराया तूने मुझको।
अन्य भाषाओं का भी,
बोध कराया तूने मुझको।

राजनीति तथा देश-विदेश की खबरों का
जानकार बनाया तूने मुझको।
कितनी नामी हस्तियों का भी,
जानकार बनाया तूने मुझको।

कितने ही कवियों और लेखकों के जीवन से,
परिचित कराया तूने मुझको।
कितने महापुरुषों, देश-प्रेमियों और
वीर शहीदों की गाथाओं से भी,
परिचित कराया तूने मुझको।

कितने किस्से, कहानियाँ और
चुटकुले सुनाकर,
खूब हँसाया तूने मुझको।
कितने तरीकों से अपनाकर,

समझदार बनाया तूने मुझको।
माँ सरस्वती का दर्शन कराया,
तूने ही मुझको।
देशप्रेम भाईचारे और एकता का,
पाठ पढ़ाया तूने मुझको।

अपने धर्म और ईमान को निभाना,
सिखाया तूने ही मुझको।
कर्तव्यनिष्ठा और सत्यनिष्ठा का मार्ग,
दिखाया तूने ही मुझको।

जाति और धर्म का भेद भुलाकर,
साथ चलना सिखाया तूने मुझको।
वतन की राह में मिलकर,
आगे बढ़ना सिखाया तूने मुझको।

कठिन परिस्थितियों से लड़ना,
सिखाया तूने मुझको।
सब्र और शांति को धरना,
सिखाया तूने मुझको।

आज इस काबिल बनाया,
तूने मुझको।
एक कवयित्री और
अनेकों प्रमाणपत्रों का हकदार बनाया
तूने ही मुझको॥





व्यावहार का फ़ल

श्रीमती मोना एल. नरसानी

वरिष्ठ लिपिक

सिविल अभियांत्रिकी विभाग

एक गाँव में मोहन नाम का एक मेहनती और ईमानदार आदमी रहता था, वह एक कॉल्ड स्टोर में काम करता था, एक दिन काम करते-करते उसे वक्त का पता ही नहीं चला कि छुट्टी का वक्त हो गया है और जब उसने घड़ी देखी तब तक बहुत देर हो चुकी थी और चौकीदार रोज की तरह कॉल्ड स्टोर के दरवाजे बंद करके गेट पर चला गया था।

वहाँ का गेट कॉल्ड स्टोर से काफी दूरी पर था, वहाँ से कोई आवाज दे तो, कोई सुन नहीं सकता था। अब मोहन बहुत ही घबरा गया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा, पर उसकी आवाज बाहर तक सुनाई ही नहीं दी, इससे वह और घबरा गया और सोचने लगा कि मैं तो इधर ही बर्फ बनकर मर जाऊँगा, मेरी तो यहाँ कोई आवाज ही नहीं सुन पाएगा, मैं क्या कहूँ और ईश्वर से प्रार्थना करने लगा, हे मेरे प्रभु, मैंने अगर मेरे जीवन में कोई अच्छा कार्य किया हो तो उसके फलस्वरूप मेरी आज जान बचा लो, नहीं तो मैं इस बर्फ में ठिरुर-ठिरुर कर मर जाऊँगा। उधर चौकीदार को लगा कि आज सब गेट से बाहर गए पर मोहन तो बाहर आया ही नहीं है। मोहन एक ही ऐसा कामदार है जो सुबह शाम मुझे राम-राम करता है, पर आज बाहर ही नहीं आया, शायद वह अंदर रह गया होगा और वह दौड़ कर कॉल्ड स्टोर पहुंचा और ताला खोला। वहाँ मोहन बेहोश पड़ा था और फिर जल्दी से उसने डॉक्टर को बुलाकर मोहन का इलाज करवाया और थोड़ी देर बाद मोहन को होश आया तो उसने देखा कि मैं तो जीवित हूँ और चौकीदार मेरे पास खड़ा है तब मोहन ने भगवान को मन ही मन धन्यवाद किया और चौकीदार से पूछा कि “आपने मेरी जान कैसे बचाई”। तब चौकीदार ने कहा “तुम्हारे व्यवहार ने ही तुम्हारी जान बचाई है”। उसने पूछा “कैसे?” चौकीदार ने कहा आप एक ही ऐसे स्टाफ हो जो रोज सुबह-शाम मुझे राम-राम करते हो और मैं आपको सलाम करता हूँ पर आज आपने सुबह राम-राम की ओर शाम के समय आप दिखें नहीं तब मैंने सोचा कि आप अन्दर रह गये होंगे और मैं दौड़ कर इधर आया और आपकी जान बचाई। मोहन ने चौकीदार का बहुत-बहुत धन्यवाद किया और अपने घर लौटा।

शिक्षा : इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि, हमें भी अपने जीवन-काल में छोटे-बड़े, सब से अच्छा व्यवहार रखना चाहिए, न जाने कब किसकी ज़रूरत पड़ जाए, जैसे मोहन की जान चौकीदार ने बचा ली और मुसीबत के वक्त उसके अच्छे व्यवहार ने उसकी जान बचाई। “जो इन्सान सच्चाई और ईमानदारी के रास्ते पर चला है और दूसरों की मदद करता है, उसके जीवन में मुसीबतें ज़रूर आती हैं, लेकिन भगवान उनकी मुसीबतों का हल किसी रूप में कर देते हैं”।



चल पड़े मेरे कदम



श्री जयन आर. नायर
वरिष्ठ लिपिक, बंदरगाह प्रभाग

राह में यूँ अकेले चल पड़े थे जब मेरे कदम,
न था मालूम कैसे ये सफर, अब मेरा जाएगा थम,
राह में यूँ अकेले चल पड़े थे जब मेरे कदम।

तन्हा शुरू हुआ था वो मेरा पहला कदम,
न ही साथ कोई और न मिला किसी का दामन,
निकले थे खोजने जब दिल का चैनो अमन,
राह में यूँ अकेले चल पड़े थे जब मेरे कदम,
न था मालूम कैसे ये सफर, अब मेरा जाएगा थम।

चलते चलते राह में मिले हमें कई अपने,
आँखे मींच के जैसे दिखते हैं मीठे सपने,
साथ मिला सबका और लगे, सभी हो जैसे अपने,
राह में यूँ अकेले चल पड़े मेरे कदम,
न था मालूम कैसे ये सफर, अब मेरा जाएगा थम।

मंजिल तक आके ही जाना, कौन है अपना,
आस लगी इस दिल में कि, पूरा होना है ये सपना,
अपनों से मिलना लगा जैसे हो कुदरत की कोई रचना,
राह में यूँ अकेले चल पड़े थे जब मेरे कदम,
न था मालूम कैसे ये सफर, अब मेरा जाएगा थम।





शंत नेहा सिंह जी

गुरुद्वारे में सतसंग हो रहा था,

जांति पाई गुक ज्ञातगुक पूजे
मुख्य उपजे बाजे अनहंद तूरे,
ताप याप कंताप बिनाक्से,
हवि किमक्त किलबिक्ख नाल्से,
अनंद कबहु मिलि मुन्दक नाकी,
गुक नानक मेकी पैज कंवाकी ॥

श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी

प्रधान लिपिक, भंडार प्रभाग

सतसंग पूरा होते ही सारी संगत उठकर चली गई । लेकिन एक 17-18 साल का बालक उधर ही बैठा रह गया ।

महापुरुषों ने उसे बुलाया । बालक से पूछा आपको घर नहीं जाना । बालक ने पूछा गुरु नानक मेरी पैज कब संवारेंगे । मुझे इधर भी दुख न हो उधर भी दुख न हो और कहीं भी मुझे कोई भी दुख न हो, बाबाजी मुझे कोई तो आप रास्ता बताओ, बाबा नैन सिंह ने सोचा कि बालक के मन को ये लाईन छू गई है कि “गुरु नानक मेरी पैज संवारे” ।

बाबा ने पूछा, बालक तुम्हारा नित नेम क्या है ? गुरु से प्यार कितना है ? बालक ने कहा, बाबाजी में पांच बाणी रोज पढ़ता हूँ । बाबा नैन सिंह ने पूछा, कौन से समय ? बालक ने कहा कभी 3 बजे कभी 4 बजे जप जी साहिब जी तो कभी 6 बजे सुखमनी साहिबजी तो कभी 8 बजे या नौ बजे रहरास साहिब जी, अर्थात जब कभी भी नींद खुल जाती है तब पढ़ लेता हूँ । बाबा जी ने बालक को समझाया, सिर्फ अमृत बेला संभालो, तो गुरु नानक तेरी पैज संवार लेगा, नित नेम अमृत बेला संवारो ।

बालक साईकल लेकर लुधियाना गया अपनी माता और दादी को बोला मुझे सुबह जल्दी उठा लेना, बालक ने अलार्म भी रखा, सुबह अमृत बेले अलार्म बजता रहा माता और दादी भी सो गए थे । बालक उठा नहीं, उसका मन उदास हो गया, वचन देकर आया था और प्रण करके आया था कि मैं अपनी अमृत बेला संभालूँगा । उस बालक ने अपने आपको सजा दी । अपने आप से कहा कि मैं आज भोजन ग्रहण नहीं करूँगा । माता ने कहा, दादी ने कहा लेकिन बालक ने भोजन नहीं खाया । दूसरे दिन भी बालक नहीं उठा, दूसरे दिन उसने पानी पीना भी बंद कर दिया, अपने आप को सजा दी ।

तीसरे दिन माता और दादी दोनों पूरी रात चरखा कातती रही कि बच्चे को उठाने की खातिर । बालक उठा, चार घंटे साईकल चलाकर लुधियाना से दरबार पहुंचा एवं उसने अपना अमृतबेला संभाला । अब वह नित नेम अपना अमृतबेला संभालने लगा ।

गुरु का प्यार पाने के लिए बालक नित नेम स्तुति करने लगा । अपना दुख भुलाने के लिए लोग अपने आपको गलत रास्ते पर ले जाते हैं, लेकिन ये बालक बाणी जपता रहा ।

गुरुबाणी कहती है “नित उठ गाओ अमृतबाणी, नित जप प्रभु की बाणी ।”

जो नित नेम अमृतबाणी जपता है उस सिक्ख की, उस बंदे को कोई भी शक्ति हरा नहीं सकती (यहाँ पर सिक्ख का मतलब कोई भी पंजाबी व्यक्ति नहीं होता, लेकिन सिक्ख का मतलब है सच्चा इन्सान) ।

नित नेम अमृतबेला संभालने वाले सिक्ख के साथ न जाने कितने लोग उसके संपर्क में आने वाले इस संसार सागर से तर कर निकल जाते हैं ।

बालक के सदके उसकी माताजी, उसकी दादी जी का भी अमृत बेला संवर गया ।

यह एक सच्ची घटना है । इतिहास बताता है कि ये ही बालक बड़ा होकर संत बना । बाबाजी नैनसिंह ने इस का नाम दिया संत नेहा सिंहजी । इसका मीहा सिंह भी नाम पड़ा, क्योंकि मीह में (बरसात में) भी नाम जपना नहीं भूला था ।





ગુજરાત મેં મૂંગા દાલ કી ખિચડી ખાને કે બાદ, કયા થા જહાંગીર કા સિધુવણ



સુશ્રી ગીતા ત્રિપાઠી

ડૉ.ઇ.વી.ଓ., ઇ.ડી.પી. અનુભાગ

ખિચડી કો ખાતે હી બાદશાહ જહાંગીર ને કહા-વાહ, કયા સ્વાદ હૈ ।

મુગલ બાદશાહ માંસાહારી ખાને કે શૌકીન થે, આમતૌર પર શાકાહારી ખાનોં કા સ્વાદ ઉન્હેં સમજ્ઞ મેં નહીં આતા થા । જબ બાદશાહ જહાંગીર અપને લાવલશ્કર કે સાથ ગુજરાત કે દૌરે પર થા, ઉસને વહાં લોગોં કો ખિચડી ખાતે દેખા, ઉત્સુકતા કે નાતે જહાંગીર ને ભી ઇસકા સ્વાદ લિયા, ઇસકે બાદ ક્યા હુઆ ।

મકર સંક્રાંતિ પર ખિચડી ના હો એસા તો હો નહીં સકતા । યું ભી ભારતીય ખિચડી અબ ગ્લોબલ ફૂડ બન ચુકી હૈ । યે સેહદમંદ ભી હૈ ઔર સ્વાદિષ્ટ ભી । ખિચડી એસા વ્યંજન હૈ, જિસે મુગલ બાદશાહ જહાંગીર ને ચખા તો વો ભી ઇસકા દીવાના હો ગયા । હાલાંકિ પહલે ઉસકા માનના થા કિ યે ખાના ભારત મેં ગરીબ લોગ ખાયા કરતે હોયાં ।

જહાંગીર ગુજરાત કી યાત્રા પર ગાએ હુએ થે । વહાં ઉન્હોને એક ગાંબ મેં લોગોં કો કુછ ખાતે દેખા । યે કુછ અલગ થા । બાદશાહ કી ભી ઉસે ખાને કી ઇચ્છા હુઈ । જબ ઉન્હેં યે વ્યંજન પરોસા ગયા તો ઉન્હેં ઇતના પસંદ આયા કિ ઉન્હોને કહા-વાહ, યે તો લાજવાબ હૈ । યે ખિચડી થી । મૂંગ દાલ કી ખિચડી, જિસમેં ચાવલ કી જગહ બાજરે કા ઇસ્તેમાલ કિયા ગયા થા ।

બાદશાહ કો લગા કિ યે વ્યંજન મુગલ પાકશાલા મેં ભી પકના ચાહિએ । તુરંત એક ગુજરાતી રસોઝ્યા શાહી પાકશાલા કે લિએ નિયુક્ત કિયા ગયા । ખિચડી શાહી મહલ મેં જા પહુંચી । વહાં ઇસ પર ઔર પ્રયોગ હુએ । વૈસે કુછ લોગ કહતે હોય કિ ખિચડી કો દરઅસલ શાહજહાં ને મુગલ કિચન મેં શામિલ કિયા । મુગલ બાદશાહોં કો કઈ તરહ કી ખિચડી પેશ કી જાતી થી ।

દ્રાય ફ્રુટ્સ કી લાજવાબ ખિચડી

મુગલ પાકશાલા મેં એક ખાસ કિસ્મ કી ખિચડી વિકસિત કી ગઈ । જિસમેં દ્રાયફ્રુટ્સ, કેસર, તેજ પત્તા, જાવિત્રી, લોંગ ઔર અન્ય મસાલોનો કા ઇસ્તેમાલ કિયા જાતા થા । જબ યે પકને કે બાદ દસ્તરખાન પર આતી થી, તો ઇસકી લાજવાબ સુગંધ ગજબ ઢાતી થી । ભૂખ ઔર બઢ જાતી થી । જીભ પર પાની આને લગતા થા । તબ ઇસકે આગે દૂસરે વ્યંજન ફિકે પડ્યું જાતે થે ।

ખિચડી કે જાયકે

આમતૌર પર ખિચડી વિશુદ્ધ શાકાહારી વ્યંજન હૈ લેકિન મુગલકાલ મેં માંસાહારી ખિચડી કા ભી સફલ પ્રયોગ હુ�आ । જિસે હલીમ કહા ગયા । બંગાલ મેં ત્યોહારોં કે દૌરાન બનને વાલી ખિચડી તો બહુત હી ખાસ જાયકા લિએ હોતી હૈ – ઇસમેં બાદામ, લોંગ, જાવિત્રી, જાયફલ, દાલચીની, કાલી મિર્ચ મિલકર ઇસે ઇતના સ્વાદિષ્ટ સ્વાદ દેતે હોય કિ પૂછું હોય ક્યા ।

શુદ્ધ આયુર્વેદિક ખાના

અસલ મેં યે હાનિરહિત શુદ્ધ આયુર્વેદિક ખાના હૈ, જાયકે ઔર પોષકતા સે ભરપૂર । વૈજ્ઞાનિક દૃષ્ટિ સે દેખેં તો જબ ચાવલ ઔર દાલોનો સંતુલિત માત્રા મેં મિલાકર પકાતે હોય તો એમિનો એસિડ તૈયાર હોતા હૈ, જો શરીર કે લિએ બહુત જરૂરી હૈ । કહા જાતા હૈ કિ ઇસરે બેહતર પ્રોટીન કુછ હોય હી નહીં । મૂલ રૂપ સે ખિચડી કા મતલબ હૈ દાલ ઔર ચાવલ કા મિશ્રણ ।

ખિચડી તેરે કિતને રૂપ

ક્યા આપકો માલૂમ હૈ કિ ઇસકા અસલી ઉદ્ગામ કહાં થા । કહોં જાતા હૈ કિ ઇસકી શુરૂઆત દક્ષિણ ભારત મેં હુઈ થી । કુછ કહતે હોય કિ ઇસે મિસ્સ કી મિલતી-જુલતી ડિશ ખુશારી સે પ્રેરણ લેકર બનાયા ગયા થા । અબ ભી આપ ગુજરાત સે લેકર બંગાલ તક ચલે જાઇએ યા પૂરે દેશ યા દક્ષિણ એશિયા મેં ઘૂમ આઇએ । હર જગહ ખિચડી જરૂર મિલેગી લેકિન અલગ સ્વાદ વાળી । મહારાષ્ટ્ર મેં ઝીંગા મછલી ડાલકર એક ખાસ તરહ કી ખિચડી બનાઈ જાતી હૈ । ગુજરાત કે ભરૂચ મેં ખિચડી કે સાથ કઢી જરૂર

सर्व करते हैं। इस खिचड़ी में गेहूं से बने पतले सॉस, कढ़ी पत्ता, जीरा, सरसों दाने का इस्तेमाल किया जाता है। अंग्रेजों ने भी खिचड़ी को अपने तरीके से ब्रितानी अंदाज में रंगा। उन्होंने इस में दालों की जगह उबले अंडे और मछलियां मिलाई। साथ ही क्रीम भी। फिर भी इस बदली डिश को नाम दिया गया केडगेरे-खास ब्रिटिश नाश्ता।

इन्हें भी पढ़ें

इन-ए-बतूता की नजर में ये व्यंजन

एलन डेविडसन अपनी किताब आक्सफोर्ड कम्प्युनियन फॉर फूड में लिखते हैं सैकड़ों सालों से जो भी विदेशी भारत आता रहा, वो खिचड़ी के बारे में बताता रहा। अरब यात्री इन-ए-बतूता वर्ष 1340 में भारत आए। उन्होंने लिखा, मूँग को चावल के साथ उबाला जाता है, फिर इस में मक्खन मिलाकर खाया जाता है हालांकि दुनियाभर में खिचड़ी लोकप्रिय करने का श्रेय हरे कृष्ण आंदोलन की किताब हरे कृष्ण बुक ऑफ वेजेटेरियन कुकिंग को देना चाहिए।

आइन-ए-अकबरी की खिचड़ी

आइन-ए-अकबरी में अबुल फजल ने यूं तो खिचड़ी बनाने की सात विधियों का जिक्र किया है।



वर्यों न दी आवाज मुझे

आपसे एक शिकायत है
सुनो पिताजी आज मुझे,
शिक्षा दी, संस्कार दिए,
पर क्यों न दी आवाज मुझे।

जो दी होती आवाज मुझे तो
मूँक न सब कुछ सह जाती,
नोचा किस दानव ने मुझ को
चीख जगत को बतलाती।

जो लाकर देते खड़ग मुझे
नाजुक गुड़िया के स्थान पे,
चिता दरिंदों की जलती
आज किसी शमशान में।

पर एक बात मैं समझ न पाई
आप ही मुझको समझा दें,
क्या कारण रहा मेरी दुर्गति का
सोच समझ कर बतला दें।

न चाल-चलन मेरा ओछा था
और तंग न मेरे कपड़े थे,
शिक्षित और सभ्य समाज के
नियम भी मुझको जकड़े थे।

बाहर जाना तो दूर रहा
मैं तो चल भी नहीं सकती थी,
क्या खाक किसी को बहकाती
मैं महीने भर की बच्ची थी।

अनजान थी मैं इस कूर सत्य से कि
मैं कलयुग में जन्मी नारी थी,
क्या कर पाती पहचान दैत्य की
उम्र पाँच साल ही सारी थी।

गर्व कर सको आप भी दिन-रात
मैं मेहनत करती थी,
पर घात लगाए रहते भेड़िए
पढ़ने जाने से डरती थी।

अपने पैरों पर खड़ी होकर
जग में पहचान बनाती मैं,
जो न जाती उस दिन दफ्तर
कुछ और बरस जी जाती मैं।

क्या गुनाह किया जो मंदिर गई
संध्या वंदन करने को,
वृद्ध - अवस्था भी नहीं छोड़ी
हवस-अरिन में जलने को।

श्रीमती सुमन चंद्रमानी
वरिष्ठ लिपिक
सिविल अभियांत्रिकी विभाग



आखिर कब तक और चलेगा
नंगा-नाच दुष्कर्मियों का,
बैखौफ उड़ेगा यूं मजाक
न्याय तंत्र की कमियों का।

मुझे मारने वाला देखना
कल फिर घात लगाएगा,
हार गया है देश भी अब
और कितनी मशाल जलाएगा।



जो चाहोगे सो पाओगे



सुश्री गीता त्रिपाठी

डी.ई.वी.ओ., ई.डी.पी. अनुभाग

एक साधु घाट किनारे अपना डेरा डाले हुए था। वहाँ वह धूनी रमा कर दिन भर बैठा रहता और बीच-बीच में ऊँची आवाज में चिल्लाता, 'जो चाहोगे सो पाओगे'। उस रास्ते से गुजरने वाले लोग उसे पागल समझते थे। वे उसकी बात सुनकर अनसुना कर देते और जो सुनते, वे उस पर हँसते थे।

एक दिन एक बेरोजगार युवक उस रास्ते से गुजर रहा था। साधु के चिल्लाने की आवाज उसके कानों में भी पड़ी - "जो चाहोगे सो पाओगे!" "जो चाहोगे सो पाओगे!" ये वाक्य सुनकर वह युवक साधु के पास आ गया और उससे पूछने लगा, "बाबा! आप बहुत देर से जो चाहोगे सो पाओगे चिल्ला रहे हो, क्या आप सब में मुझे वो दे सकते हो, जो मैं पाना चाहता हूँ?"

साधु बोला, "हाँ बेटा, लेकिन पहले तुम मुझे ये बताओ कि तुम पाना क्या चाहते हो?" बाबा मैं चाहता हूँ कि एक दिन मैं हीरों का बहुत बड़ा व्यापारी बनूँ, क्या आप मेरी ये इच्छा पूरी कर सकते हैं?" युवक बोला, "बिल्कुल बेटा, मैं तुम्हें एक हीरा और एक मोती देता हूँ, उससे तुम जितने चाहे हीरे-मोती बना लेना"। साधु बोला, साधु की बात सुनकर युवक की आँखों में आशा की ज्योति चमक उठी।

फिर साधु ने उसे अपनी दोनों हथेलियाँ आगे बढ़ाने को कहा, युवक ने अपनी हथेलियाँ साधु के सामने कर दी। साधु ने पहले उसकी एक हथेली पर अपना हाथ रखा और बोला, "बेटा, ये इस दुनिया का सबसे अनमोल हीरा है, इसे 'समय'" कहते हैं, इसे जोर से अपनी मुट्ठी में जकड़ लो। इसके द्वारा तुम जितने चाहे उतने हीरे बना सकते हो। इसे कभी अपने हाथ से निकलने मत देना"। फिर साधुने अपना दूसरा हाथ युवक की दूसरी हथेली पर रखकर कहा, "बेटा, ये दुनिया का सबसे कीमती मोती है। इसे 'धैर्य'" कहते हैं। जब किसी कार्य में समय लगाने के बाद भी वांछित परिणाम प्राप्त ना हो, तो इस धैर्य नामक मोती को धारण कर लेना। यदि यह मोती तुम्हारे पास है, तो तुम दुनिया में जो चाहो, वो हासिल कर सकते हो"। युवक ने ध्यान से साधु की बात सुनी और उन्हें धन्यवाद कर वहाँ से चल पड़ा। उसे सफलता प्राप्ति के दो गुरुमंत्र मिल गए थे। उसने निश्चय किया कि वह कभी अपना समय व्यर्थ नहीं गंवायेगा और सदा धैर्य से काम लेगा।

कुछ समय बाद उसने हीरे के एक बड़े व्यापारी के यहाँ काम करना प्रारंभ किया। कुछ वर्षों तक वह दिल लगाकर व्यवसाय का हर गुर सीखता और एक दिन अपनी मेहनत और लगन से अपना सपना साकार करते हुए हीरे का बहुत बड़ा व्यापारी बना।

सीख : लक्ष्य प्राप्ति के लिए सदा "समय" और "धैर्य" नाम के हीरे-मोती अपने साथ रखें। अपना समय कभी व्यर्थ ना जाने दें और कठिन समय में धैर्य का दामन ना छोड़ें। सफलता अवश्य प्राप्त होगी।



आ गाया सावन

आसमान से बरसा कच्चा सोना,
आखिर कुदरत को दिख गया कच्च का सूखा सोना,
भूमि-पुत्रों ने ली राहत की साँस,
मिल गई फिर जीने की आस।

पशुओं को मिल गया चारा,
झूम उठा रेगिस्तान सारा,
मिट्टी से आने लगी सोंधी-सोंधी महक,
हर तरफ पंछियों की मधुर चहक।



जल की समस्या का हो गया हल,
फिर भी इस्तेमाल के बाद अवश्य बंद करें नल,
आज की जरूरत तो हो गई है पूरी,
किंतु भविष्य के लिये जल-संग्रह है जरूरी।

मंदिर से आने लगी आरती की मधुर धुन,
श्रद्धालु मग्न हो कर, रहे हैं सुन,
देखकर ये नजारा मन हो गया पावन,
लो आ गया सावन, लो आ गया सावन !!



श्री कमल असनानी
मुख्य चिकित्सा अधिकारी के
वैयक्तिक सहायक



आत्म-दर्शन एवं चिंतन

शिक्षा पुकं संस्कार



श्री गोपाल शर्मा

लेखा अधिकारी

जब बच्चा किसी अजनबी से मिलता है, तो शिक्षा नहीं, बल्कि संस्कार दिखते हैं। शिक्षा सिखाती है, कि पैसा कमाओ, जब कि संस्कार पैसा कैसे कमाया जाय यह सिखाते हैं। गलत रास्ते से कमाए गए पैसों की परिणिति भी गलत होती है। सही रास्तों से कमाए गए पैसों का परिणाम सदैव सुखद रहता है। गलत एवं सही रास्ते का यह भेद संस्कार ही सिखलाते हैं। संस्कृति संस्कारों से ही बनती है, यही कारण है कि पढ़े-लिखे लोग अनपढ़ संस्कारितों पर पी.एच.डी. करते हैं।

जब समाज के अवयव एवं घटक श्रेष्ठ हों, तब ही वह महान बनता है। इन घटकों को श्रेष्ठ बनाने के लिए बच्चों में दया, करुणा, सरलता, शील, प्रतिभा, परोपकार, सहिष्णुता, सहकार से राष्ट्र प्रेम अत्यावश्यक है। धर्म से संस्कारों का अत्यधिक महत्व है एवं उसका उद्देश्य शरीर, मन एवं मस्तिष्क की शुद्धि एवं उनको बलवान बनाना है ताकि नई पीढ़ी आदर्श रूप में अपनी भूमिका निभा सके।



इच्छाशक्ति - महात्मा बुद्ध



श्रीमती कल्पना वी. महेश्वरी

श्रम निरीक्षक - यातायात विभाग

एक बार आनंद ने भगवान बुद्ध से पुछा - जल, वायु, अग्नि इत्यादि तत्वों में सबसे शक्तिशाली तत्व कौन-सा है ?

भगवान बुद्ध ने कहा- आनंद ! पत्थर सबसे कठोर और शक्तिशाली दिखता है लेकिन लोहे का हथौड़ा पत्थर के टुकड़े-टुकड़े कर देता है, इसलिये लोहा पत्थर से अधिक शक्तिशाली है। लेकिन लोहार आग की भट्टी में लोहे को गलाकर उसे मनचाही शक्ल में ढाल देता है, इसलिये आग लोहा और पत्थर से अधिक शक्तिशाली है।

मगर आग कितनी भी विकराल क्यों न हो, जल उसे शांत कर देता है। इसलिये जल, पत्थर, लोहे और अग्नि से अधिक शक्तिशाली है। लेकिन जल से भरे बादलों को वायु कहीं से कहीं उड़ाकर ले जाती है, इसलिये वायु जल से भी अधिक बलशाली है।

लेकिन हे आनंद ! इच्छाशक्ति वायु की दिशा को भी मोड़ सकती है। इसलिये सबसे अधिक शक्तिशाली तत्व है - व्यक्ति की इच्छाशक्ति। इच्छाशक्ति से अधिक बलशाली तत्व कोई नहीं है, यदि किसी काम को अपनी इच्छा से किया जाये तो सफलता जरूर मिलती है।

“खुशी कोई निर्माण होने की वस्तु नहीं ।

वो तो अपने कर्म के अनुसार मिलती है ॥

- दलाई लामा



प्लास्टिक है पृथ्वी का भक्षक, प्लास्टिक हटाओ बनो पृथ्वी के रक्षक ।



आपकी बेटी



सुश्री रीना महेश्वरी

सुपुत्री श्री राजेश महेश्वरी

ऑयल मैन, टग अनुभाग

हमारी जिंदगी में अक्सर बहुत सारी घटनाएँ घटित होती रहती हैं, कुछ घटनाओं से हम खुश हो जाते हैं, तो कुछ घटनाओं से हम दुःखी हो जाते हैं, लेकिन एक सच्ची बात यह है कि हम इन सारी घटनाओं में से कुछ न कुछ अच्छा, जीवनउपयोगी सीख सकते हैं।

अक्सर पाठशालाओं में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच मार-पीट, सजा और कठोरता ही नजर आती है। इस देश की सबसे बड़ी समस्याओं में एक यह समस्या भी शामिल है कि शिक्षकों को गुरु का दर्जा तो मिल जाता है। किन्तु मान-सम्मान और शिक्षक को समझने की बात पर उन पर सवाल ही सवाल उठाये जाते हैं।

हमने हमेशा से ही ऐसा सुना है कि भविष्य में भारत एक कैसा देश बनेगा उसका आधार बच्चों को वर्तमान में दी गई शिक्षा और परवरिश पर निर्भर करता है। एक शिक्षक की जिंदगी में अनेक विद्यार्थी आते हैं और चले जाते हैं। परंतु इन सब के बीच एक शिक्षक को अच्छी आमदनी के सिवाय क्या मिलता है। उन्होंने करवाई हुई पढ़ाई में से एवं शिक्षक के चरित्र में से कुछ बच्चे ही जीवनउपयोगी मूल्य जैसे कि प्रेम, प्रेरणा, आत्मविश्वास, सुख, दुःख, शांति जैसा कुछ अच्छा सही मायने में सीख पाते हैं, तब बार-बार एक बात याद आती है कि एक दिन शिक्षक दिवस मनाने से क्या शिक्षकों को उनका मान-सम्मान मिल जाता है? उनकी कमाई चाहे लाखों या करोड़ों रुपये भी हो जाए, फिर भी क्या उनका शिक्षक होने का उनका मान-सम्मान पूरी निष्ठा से पूर्ण हो पाता है? शिक्षक को गुरु का दर्जा देने से, विद्यार्थी द्वारा देनेवाले तोफे-मिठाईयों से भी क्या उनके आत्मसम्मान को एक नई ऊँचाई मिल सकती है? यह कहानी इन्सान और इन्सानियत को जिंदा रखने की बात का एवं समझने की बात का उल्लेख करती है।

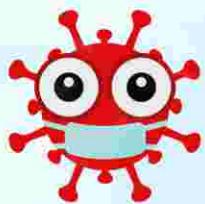
शिखा बारहवीं क्लास में थी, इस वर्ग में कुछ पचहत्तर लड़कियाँ थीं, शिखा एक ऐसी लड़की थी जो अपने जीवन में हमेशा श्रेष्ठ-विचारों को अपनाती थी एवं आदर्शों और मूल्यों पर चलने वाली लड़की थी। इस लड़की ने अपने जीवन में कुछ दुःख देखे थे, इसके बावजूद वह हमेशा हार न मानने वाला जुनून रखती थी। एक बार शिखा से स्कूल में एक गलती हो जाती है वह अपने एक शिक्षक के प्रश्न का उत्तर नहीं देती एवं उनसे मुँह बिगड़ती है। शिक्षक को शिखा पर बहुत गुस्सा आता है और वह शिखा को लगातार दो-तीन दिन तक पढ़ाते-पढ़ाते बहुत कुछ सुनाते हैं कि बच्चे कई बार अभिमानी और मनस्वी प्रकार के होते हैं, वो किसी की सुनते नहीं हैं, उन्हें सिर्फ मौज-मजा से जिंदगी जीनी होती है, वो कई बार बाल-अपराध प्रकार का वर्तन कर बैठते हैं, और भी बहुत कुछ वह शिखा को सुनाते हैं, इन्हीं सारी बातों से शिखा बहुत दुःखी होती है, इस कक्षा की सभी लड़कियों को लग रहा था कि यह शिक्षक हमें सिर्फ पढ़ा रहे हैं, लेकिन शिखा को पता था कि हमारे शिक्षक मुझसे नाराज हैं एवं मुझसे दुःखी हैं और वह अपनी जिंदगी से भी कुछ परेशान हैं। इसलिए वह मुझे यह सब सुना रहे हैं।

सामान्य तौर पर जब कोई ऐसी बात विद्यार्थी को पता चलती है, तो वह तुरंत शिक्षक की शिकायत करता है, लेकिन शिखा ने ऐसा नहीं किया। शिखा उनसे माफी मांगती है और कहती है कि “मुझे माफ कर दीजिये मेरी गलतियों के लिये, साथ ही वह उनसे यह भी कहती है कि आज तक आपकी जिंदगी में जितने भी ऐसे लोग आये जो आपको नहीं समझ पाये हैं जिन लोगों ने आपको तकलीफ दी है, जो लोग आपको समझ नहीं पाए हैं, उन लोगों के लिए यह कठोर शब्द है, मेरे लिए नहीं”।

ये जो कुछ भी आप बोल रहे हैं, यह आप नहीं परंतु आपके अंदर से वह सारे लोग बोल रहे हैं, जिन्होंने आपकी जिंदगी में कभी न कभी आपको नीचा दिखाया है, आपको तकलीफ दी है, इस दस साल की नौकरी में आपने अच्छी आमदनी तो प्राप्त की है, लेकिन सुख चैन और अपने अंदर की अंतरात्मा की शांति को आप कहीं न कहीं गुम कर बैठते हैं। मैं आपके लिए कुछ ज्यादा तो नहीं कर सकती लेकिन मैं एक काम जरूर कर सकती हूँ मैं परमात्मा से प्रार्थना कर सकती हूँ कि जब तक आप जिएं आपको कोई तकलीफ न हो, आपका पारिवारिक तथा व्यवसायिक जीवन आगे की जिंदगी में खुशी से बीते, आपको कभी कोई शारीरिक बीमारी का सामना न करना पड़े तथा आपकी लंबी आयु रहे, और आप स्वस्थ जीवन जियें। आपके जीवन में खुशियाँ ही खुशियाँ हो और आप पर आने वाले सारे संकट टल जायें।

यह सब सुनकर शिक्षक की आँखें भर आती हैं और वह कहते हैं कि विद्यार्थी तो बहुत आये और बहुत गये, लेकिन तुमने मुझे मेरी बेटी होने का अहसास करवाया है।





यानि 2020 : एक अीर्ख



श्री सुब्रत कुमार साहा
स्टेशन अधिकारी
अग्रिशमन अनुभाग

अगर कभी कोई महामारी की बात करता, तो हमेशा ही मैं किसी चलचित्र या कहानी के बारे मैं सोचता। बिल्कुल! कम से कम 2019 तक तो ऐसा ही था। इक्कीसवीं सदी में हूँ, इसीलिए मुझे ऐसा लगता था कि 'अब ऐसा थोड़ी न होने वाला है?' आखिर हमारे मेडिकल साइंस ने भी कितनी प्रगति कर ली है। लेकिन मेरे ख्याल से, ये गए साल ने मुझे समझा दिया कि मैं कितना गलत था, क्योंकि कोरोना की सर्वव्यापी महामारी के बारे मैं जब घोषित किया गया, जो सबसे पहला फैसला हमने लिया, वो ये था कि आधी दुनिया को बाहर जाने से संरोध करें और घर बैठे ये इंतजार करें कि हमारा मेडिकल साइंस और भी प्रगति करे।

इस गए 2020 के साल ने मुझे सिखाया है कि लोगों से आमने-सामने मिलना भी एक किस्मत की बात है। ताज्जुब होता है न? क्या कभी सोचा था कि घर से बाहर जाना भी एक विशेषाधिकार बन जायेगा? नहीं न? मैंने भी नहीं सोचा था। पर अब जाके ये एहसास हुआ है कि हमने इस बात को कितना हल्के में लिया था। इस महामारी ने हमें ये समझने पर मजबूर कर दिया है कि लोगों से मिलना, बातें करना, बैठ के एक साथ खाना, सब किस्मत की बातें हैं। जैसे कहा जाता है कि ''जब तक तुम से कुछ छीन न लिया जाये, तब तक उसकी कदर नहीं होती।'' शायद हमारे साथ यही हुआ है।

ये गए साल ने हमें ये भी एहसास कराया है कि हम जो अपने अपनों से, अपने दोस्तों से फोन पर बातें करते हैं, वो कभी भी एक साथ बैठ के चाय पीने जैसी खुशी नहीं दिला सकता। अब जाके हम समझे हैं कि, जिन्दगी कितनी छोटी-सी है और मिलने का मौका कितना कम। सोचो ऐसे कितने ही कारण होंगे जो, एक ही पल में किसी अपने को हम से छीन सकते हैं। इसीलिए जब तक साथ है तब तक मिलने को टालने से अच्छा है कि मिलने का बहाना सोचें।

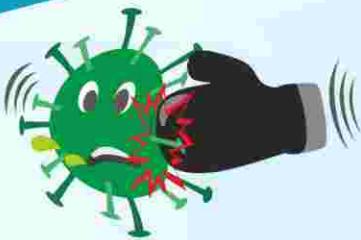
इस साल सब बंद होने के कारण हम सब घर पर ही थे, इसीलिए मुझे ये भी पता चला कि परिवार के साथ होने से चिंता कितनी कम होती है, अकेलापन महसूस नहीं होता। जरा उनके बारे मैं सोचो, जो घर वापस ही नहीं आ पाए। सोचो कैसा लगता होगा जब फोन पर अपनों से बातें तो हो जाती हों, पर रातों की नींद उड़ जाती हो इस चिंता में कि सब कुशल मंगल ही रहे। इतने में अगर किसी को महामारी हो गई है ऐसी खबर आये तो चैन भी साथ छोड़ देता है। इसीलिए अगर आप अपने अपनों के साथ हैं तो दो चीजें जरूर करियेगा, एक ऊपर वाले से शुक्रिया और दूसरा, जो वापस नहीं आ पाए उनके लिए प्रार्थना।

अभी भी ये सर्वव्यापी महामारी कोरोना है। अब तो 2021 हो गया है। उम्मीद है जल्दी ही चला जायेगा। आशा है कि फिर से मैं अपने अपनों से और दोस्तों से मिल पाऊँगा। हाँ, पर इस बार कुछ अलग जरूर होगा। क्योंकि जब इस बार जब भी सबसे मिलूंगा तब मैं ईश्वर से शुक्रिया करूँगा कि हम फिर एक साथ बैठकर हँसी मजाक कर सके। आखिर किस्मत की बात है। पता नहीं कब तक साथ दे !!

अन्तिमेतना की पुकार



दिल भी इक ज़िद पे अड़ा, सुकून की तलाश में परेशां कोई,	फरेबी के दरमियान, शीशे सा रास ना आया कोई,	रुह से छिनकर चिंगारी, मुस्कुराता चला जा रहा कोई,	श्री चित्रांग कार्मेंदु व्यास सहा. अधि. अभियंता (विद्युत)
खामोशी के पन्नों में ढूँढता गहरी लज्जत-इ-गिरया कोई,	यूँ तो सूरज जलता रहा, बिना जले इबादत पाया और कोई,	वक्त के सन्नाटों में, यूँ ही याद आ गया कोई।	
जीना सिखा के गया बहारों में जर्द पत्ता कोई	बड़े खुलूस से जिक्र कीजिये, तन्हाई सा हमसफर ना कोई,		



कोविड 19 के बाद सामाजिक जीवन

वक्त को भी नहीं पता था कभी ऐसा भी वक्त आएगा, एक विषाणु कोरोना के चलते, सारा जग थम जाएगा। बन्द रहेंगे कल कारखाने, नहीं खुलेंगे मयखाने, पीनेवाले पागल बनके, पहुंच जाएंगे पागलखाने। किसको मालूम था आज से पहले, अपना घर ही, अपना कारागार बन जाएगा। वक्त को भी नहीं पता था, कभी ऐसा वक्त भी आएगा। लोगों के पास अपनों से मिलने का वक्त नहीं था, भगवान थे पर भक्त नहीं था। बहा देते थे बात-बात पर खून, लगता था रक्त रक्त नहीं था। इससे पहले नहीं पता था, ऐसा कहर कुदरत का आएगा। वक्त को नहीं पता था, कभी ऐसा वक्त भी आएगा।

आप माने या ना माने दुनिया हमेशा के लिए बदल चुकी है, अब जब भी दुनिया नॉर्मल होगी वो एक नया नॉर्मल होगा। अगले 2 साल कम से कम एकदम सामान्य जिंदगी की अपेक्षा करना मुश्किल है। मास्क, सोशल डिस्टेंसिंग, सैनेटाइजर और बार-बार हाथ धोना, ये जिंदगी के नए हिस्से होंगे। कुछ लोग अब कभी ऑफिस नहीं जाएंगे, बच्चों की होम स्कूलिंग के बारे में बहुत गंभीरता से सोच लीजिएगा, मॉल, मल्टीप्लेक्स और ट्रावेल नहीं कर पाएंगे। कई लोगों की नौकरियां जाएंगी, रियल इस्टेट ट्रॉटेगा, होम स्कूलिंग सामान्य होगा, होम डिलेवरी करने वाली कंपनियों के लिए ये सबसे बढ़िया वक्त आएगा। दुनिया भर की कई कंपनियां चीन से निकलेंगी, लेकिन भारत को सबसे ज्यादा फायदा होगा ये तथ नहीं है। तो कुल मिलाकर खर्च पर लगाम लगाएं, नौकरी के बजाय कारोबारी बनने के बारे में सोचें, शरीर की इम्युनिटी बढ़ाने पर ध्यान दें, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। मिडिल क्लास हैं तो मदद मांगने में डिझाके ना, हम में से कई लोगों की चमकदार शर्ट के नीचे बनियान में छेद है। हमें काफी कुछ जापान जैसे लड़ना होगा, जहां 5 रिक्टर स्केल का भूकंप आता है, तबाही आती है और वे पूर्ण अनुशासित होकर वापस संघर्ष करते हैं। हालांकि, जापान जैसे बेहद अनुशासित देश और भारत जैसे घोर अनुशासनहीन देश की आपस में कोई तुलना नहीं हो सकती लेकिन रास्ता, यही रास्ता है।

कोरोना की ज्यादा चिंता से हार्ट और इम्यून सिस्टम को खतरा है इसलिए बजाए चिंता के चिंतन कीजिए। आपको इतना अच्छा शांतिपूर्ण समय मिला है चिंतन के लिए न कि चिंता के लिए। या कीजिए “अनहोनी होनी नहीं, होनी है सो होए, फिर काहे की चिंता, चादर ओढ़के सोए”। बस बेफिक्र सोने के साथ साथ विचार करें कि अपने बचे जीवन को सार्थक कैसे जिए? न जाने कितनी चीजें होंगी जो अब तक आप नहीं कर पाए होंगे... अपने शौक, सेहत का ध्यान, मनोरंजन, परिवार में चर्चा। तो वो सब करिए। वैसे भी जीवन मरण को आपके हाथ में नहीं है, तो चिंता से क्या लाभ? जो समय बीत गया वो तो आपके हाथ में नहीं है। जो अब है, उसे अर्थपूर्ण कैसे जिए? ये सोचिए। कहते हैं कि जिसने आज अगर कल से बेहतर नहीं जिया तो उसे फिर एक और कल की क्या ज़रूरत। कल तक हम जो अच्छा और सही जीवन में नहीं कर पाए या जी पाए लॉकडाउन के बाद उसको जियें। ईश्वर ने शायद इसलिए मनन करने का मौका दिया है। इसलिए तो कहते हैं कि चुनौती से आप हारते नहीं। या तो जीतते हैं या सीखते हैं। चुनौती से हारे मतलब जीवन से हारे। जीवन में चुनौतियां तो आएंगी ही।

ऐश से क्यूं हम खुश हुए, गम से क्यूं घबराया किए, जिंदगी क्या जाने क्या थी, और हम क्या समझा किए। सारे विश्व को एक पल में शांत करने की ताकत प्रकृति में है, हम जात-पांत, धर्म भेद, वर्ण भेद, प्रांत वाद के अहंकार से भरे हुए है। यह गर्व, यह घमंड कोरोना ने एक झटके में तोड़ दिया, इस संसार का कोई भी जीव इस प्रकृति के आगे बेबस है, लाचार है। प्रकृति ने शायद यही संदेश दिया है। प्यार से रहो, जियो और जीने दो। हम डरते थे कभी तन्हाई से बीमार न पड़ जायें अब महफिलों से खौफ है कि रोग न ले आये। न जाने कैसी गुस्ताखी कर गये, कि चेहरे पर नकाब लगाने पड़ गये। इस घुटन से कब निकल पाएंगे, खुली हवा में साँस कब ले पाएंगे। उन्हें शिकायत है कि घर पर नहीं मिलते, अब हैं तो वो घर के पास भी नहीं फटकते। कोरोना हमारा कीमती खजाना ले गया, दोस्तों के साथ बैठे जैसे ज़माना हो गया। आने वाले समय में हमें क्या करना होगा, शहरों या कस्बों में हम सभी को स्थिति से अवगत होना होगा।

हमें यातायात नियमों का पालन करने के लिए ज़िम्मेदार नागरिक होने की आवश्यकता है और अपने आप को, अपने परिवार और अपने सामान को बचाने में सक्रिय रहें। नौकरी छूटने / व्यापार पर प्रभाव के कारण असामाजिक घटनाओं में अचानक उछाल आ सकता है।

1. लोगों को बहुत सावधान रहना होगा। इसमें घर के लोग, बच्चे, स्कूल और कॉलेज जाने वाले लड़के/लड़कियां, कामकाजी महिला/पुरुष शामिल हैं। 2. इस दौरान हो सके तो महंगी घड़ियाँ न पहनें। 3. महंगे चेन, चूड़ियाँ, ईयर रिंग्स न पहनें। अपने हैंड बैग्स के साथ सावधानी बरतें। 4. पुरुष हाई एंड वॉच, महंगे कंगन और चेन पहनने से परहेज कर सकते हैं। 5. अपने मोबाइल फोन का ज्यांदा इस्तेमाल जनता (सार्वजनिक) में न करें। सार्वजनिक रूप से मोबाइल का उपयोग कम से कम करने की कोशिश करें। 6. किसी भी अजनबी को हो सके तो वाहन में लिफ्ट न दें। 7. आवश्यकता से अधिक धन लेकर साथ भ्रमण पर न जाएं। 8. अपने क्रेडिट और डेबिट कार्ड को सुरक्षित रखें। 9. अपने बड़ों, पत्नी और बच्चों के कल्याण के बारे में जानने के लिए समय-समय पर घर पर फोन करते रहें। 10. घर के बड़ों और लोगों को निर्देश दें कि दरवाजें की घंटी बजाते समय मुख्य दरवाजे से सुरक्षित दूरी बनाए रखें, यदि संभव हो तो ग्रिल गेट को किसी पार्सल या पत्र प्राप्त करने के लिए ग्रिल के करीब न जाने दें। 11. बच्चों को जितना हो सके समय पर घर जल्दी लौटने की हिदायत दें। 12. घर तक पहुँचने के लिए किसी भी एकांत या छोटी शॉर्टकट वाली सड़कों का प्रयोग न करें, कोशिश यही करें कि अधिकतम मुख्य सड़कों का उपयोग करें। 13. जब आप बाहर होते हैं तो अपने आसपास के संदिग्ध लोगों पर नजर रखें। 14. हमेशा हाथ में एक आपातकालीन नंबर होना चाहिए। 15. लोगों से सुरक्षित दूरी बनाए रखें। 16. पब्लिक ज्यादातर मास्क पहनेगी, पहचानना मुश्किल होगा। 17. जो कैब सेवाओं का उपयोग करते हैं, कृपया अपनी यात्रा का विवरण अपने माता-पिता, भाई-बहन, रिश्तेदारों, दोस्तों या अभिभावकों के साथ साझा करें। 18. सरकारी परिवहन प्रणाली की कोशिश करें और उसका उपयोग करें। 19. भीड़ वाली बसों से बचें। 20. अपने दैनिक सैर के लिए जाते समय उजाले में लगभग सुबह 6:00 बजे के आसपास जाएं, शाम को अधिकतम 8:00 बजे तक मुख्य सड़कों का उपयोग करें। खाली सड़कों से बचें। 20. मॉल, समुद्र तट और पार्कों में ज्यादा समय न बिताएं। 21. अगर बच्चों को ट्यूशन क्लासेस अटेंड करना है तो बड़ों को उन्हें लाने एवं छोड़ने की जिम्मेदारी दें। 22. अपने वाहनों में कोई कीमती सामान न छोड़ें।

समग्र स्थिति सुधार होने तक इसका पालन करना होगा। कोरोना जंग पता नहीं कब तक चलती रहेगी। कोविड19 हमारी जिंदगी में मिर्च मसालों की तरह शामिल हो गया है जो स्वादानुसार कम ज्यादा होता रहेगा अगर निरोगी रहे तो ठीक, वरना पूरी तरह से उबली सब्जियों पर रहने वाले पेशेंट जैसी हालत हमारी होगी। कोई भी सरकार लंबे समय तक लॉकडाउन लगा कर रख नहीं सकती कब तक मदद के हाथ आगे आएंगे, कब तक कोरोना योद्धा बन अपनी जान की बाजी, कब तक साजिशों के शिकार होते रहेंगे, कब तक व्यापार योग उद्योग लगा लोगों की जान बचाएंगे, कब तक यूं ही जिंदगी थमी रहेगी, लगता है कि अपनी व्यथा कथा है समझिए लॉकडाउन एक ट्रायल शो था, जनता को आगाह करने का समझदारी इसी में है कि हम हमसे मैं पर विचार करने लगें, यह जिंदगी मेरी है परिवार मेरा है मेरा शहर है वतन मेरा है, मैं मैं स्वार्थ छिपा है वहीं सतर्कता भी, जैसे ही मैं की भावना पनपती हैं वैसे ही हम अपने आसपास सब सहेजने लगते हैं, एक-एक तिनका बिखरा, एक-एक तिनका बहुमूल्य जान पड़ता है, उसके लिए कितना ही प्रयास करना पड़े करके ही दम लेते हैं। मुझे बदलना है आवश्यकता अपनी, दिनचर्या में आवश्यकता की प्राथमिकता को समझना होगा, लगता है। जनता से पहले सरकारें धैर्य खोती जा रही हैं, सरकारों को जो करना है, वह करती रहेंगी। हमें स्वयं घर पर रहकर खुद को, घर वालों को, अपने आसपास को सुरक्षित रखना है। यह भी कटु सत्य है कि 2020-21 के वर्ष मानवजाति की अंतहीन पीड़ा की दास्ताँ के लिए सदैव याद किये जाएंगे।

उजड़ा उजड़ा सा, हर शहर लगता है, हमें तो यह कुदरत का कहर लगता है,
इंसान ने की, ऐसी भी क्या तरक्की, इंसान को इंसान से ही डर लगता है।





कच्छ इतिहास के पन्नों पर,,,

कच्छ इतिहास के पन्नों पर, दर्ज हैं किससे अनमोल बयान ।
लहर चली थी नवनिर्माण की, लेकर धर्म-कर्म का मूल फरमान ॥

श्री मातांगदेव ने नींव रखी थी, बारमती पंथ धर्म महान ।
बारह सिपह-सालारों संग, नरवेद यज्ञ का दिया प्रमाण ॥

श्री लुण्ठंगदेव ने अपने दम पर, किया समा-सुमरा वंश एक समान ।
अलख जगाया मानव धर्म का, लेकर बारमती धर्म मशाल ॥

श्री मातइदेव ने, कालांतर में, दिलाया जाड़ेजा वंश बहुमान ।
अपने रक्त से तिलक लगाकर, गाढ़ी बिठाया राजा रायधन अभिमान ॥

श्री मामई देव के शुभ कदमों से, हुआ पवित्र कच्छ खलियान ।
अगम-निगम की भविष्यवाणी कर, किया अचंभित यह जहान ॥

ऐसे वीर विभूतियों से, पावन है यह धरती महान ।
नमन है ऐसी गाथाओं का, जिनसे महक उठी है कच्छ दास्तान ॥



श्री नवीन के. भोईया
मुख्य यांत्रिक अभियंता के
वैयक्तिक सहायक



पथिक

पथिक है तू उस राह का,
जिसकी डगर है कांटों भरी ।
पीछा कर तू उस लक्ष्य का,
जिसकी मंजिल है फूलों भरी ।

तेरे साथ न कोई आया था,
न साथ ही कोई जाएगा ।
यह जीवनपथ है कर्मबंधन का साथ,
इस पर चल तू बनकर अपना सारथी ।

जीवनपथ की राहों पर,
आएंगे संकट अनगिनत हर तरफ ।
पर तू साथ कर लक्ष्य अपना,
चला चल, निसंकोच, निश्चय कर मन ।



पथिक बन तू अपनी डगर का,
यूं ही चलता चल, अविचल सदा ।
पा जाएगा मंजिल एक न एक दिन,
चलता चल अविरत पथ की ओर सदा ।

हमारी बेटियां



आसमान की सुंदरता सितारों से है,
नदी की सुंदरता तट से है,
फूलों की सुंदरता सुगंध से है,
और घर की सुंदरता बेटी से है।



कु. दानिशा

सुपुत्री श्री नीरजकुमार अंताणी
वरिष्ठ लिपिक, नगर विकास प्रभाग

जैसे ही “बेटी” शब्द कानों पर पड़ता है, एक दयालु व्यक्तित्व मन में आता है और स्नेह का सागर उमड़ता हुआ सुनाई देता है। अपने प्यार के साथ जीवनभर दोनों परिवारों को गिला करती है। बेटी के त्याग की पुष्टि करना संभव नहीं है।

जैसे कोई भी गाड़ी एक पहिये से नहीं चल सकती, ऐसे ही जीवनरूपी गाड़ी भी केवल पुरुषों से नहीं चल सकती, जीवन चक्र में रुक्ती और पुरुष दोनों की समान सहभागिता है। बेटियां की घटती संख्या देश के लिए चिंता का विषय है।

ये पुरुष प्रधान समाज लड़कियों को जीने नहीं देना चाहता, मुझे समझ नहीं आता मैं इन मर्दों की सोच पर हँसू या क्रोधित होऊँ, ये जानते हुए भी कि उनका अस्तित्व भी एक महिला के कारण ही है, फिर भी ये पुरुष समाज केवल पुत्र की ही कामना करता है और अपने इस पागलपन में न जाने कितनी लड़कियों का जीवन नष्ट किया है।

“ बेटी का हर रूप सुहाना, प्यार भरे हँदय का, ना कोई ठिकाना, ना कोई ठिकाना

ममता का आंचल ओढ़े हर रूप में पाया, नया तराना, नया तराना ”

बेटी हमेशा अनमोल होती है। पहले के समय में बेटियों को स्कूल में पढ़ने के लिए नहीं भेजा जाता था। बेटी के महान योगदान के बावजूद आज का गलत समाज उसे भ्रूणहत्या का उपहार देता है लेकिन अब जमाना बदल रहा है और, आज सभी लड़कियों को पढ़ाने लगे हैं। पहले यह सोचते थे कि यदि लड़की घर से बाहर जायेगी तो कुछ गलत हो जाएगा, इस वजह से बेटी को घर से बाहर नहीं निकलने दिया जाता था।

आज हम देख रहे हैं कि बेटियाँ किस तरह से विकास की ओर बढ़ रही हैं। आज डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक जैसे पदों पर लड़कियां पहुंच रही हैं। देश के विकास की भागदौड़ में भी लड़कियाँ कदम से कदम मिलाकर साथ चल रही हैं। आज लड़कों से ज्यादा लड़कियाँ आगे बढ़ रही हैं। लड़कियाँ हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रही हैं। भारत सरकार भी लड़कियों को पढ़ाने के लिए कई योजनाओं के माध्यम से सहायता दे रही है। ऐसे इस तरह देखते हुए बेटियाँ घर की ओर समाज की आधारशिला होती हैं। बिना बेटी के जीवन की कल्पना करना असंभव है।

मैं बेटी हूँ

तुम्हारी हर उम्मीदों पर खरा उत्तरनेवाली,

उम्र के साथ रूप बदलने वाली,

समय के साथ हर रिश्ते को नाम देनेवाली,

तुम्हारी लाडली बेटी, तुम्हारी प्यारी बहन,

तुम्हारी अद्धारिनी, तुम्हारी ममतामयी माँ,

एक साथ इतने अधिकारों का बोझ ढोनेवाली,

मुझे पहचानो, मेरी हकीकत जानो,

तुम्हारी इज्जत का चादर ओढ़े,

तुम्हारे नाम का कवच पहने,

मुझे इस जहां में खुलकर जीने दो,

मुझसे मेरा हक ना छीनो....मैं बेटी हूँ....





स्कूल के दोस्त

पढ़ने लिखने के लिए
आज का दिन सुहाना है,
स्कूल जाना जरूरी है
पढ़ना तो बहाना है ।

नींद न पूरी हो तो भी,
आलस कहां हम करते हैं ।
दोस्तों से मिलने को तो
किताबें हम पढ़ते हैं ।
कि फेल न हम कहीं हो जायें,
कहीं वो आगे न बढ़ जाये,
फिर यारों से न मिल पाएंगे ।
ये नहीं, कि किस मुँह से स्कूल जायेंगे ।

वो खेलने के मैदान में
घोड़ों जैसे दौड़ना,
वो होमवर्क नहीं हुआ तो
मैडम-सर से डरना,
मित्रों से काम कराने को
उन्हें खूब-खूब चढ़ाना,
और चुपके टिफिन खाने को
अपना हाथ बढ़ाना ।

हिंदी के वो व्याकरण,
और अंग्रेजों की अंग्रेजी,
गणित के वो जोड़-घटाने,
विज्ञान के वो रसायन,
याद करना तो जरूरी है ।

क्यूंकि मित्रों को बताना पड़ता है ।
फिर किसी को ज्यादा अंक मिले तो,
कुछ ज्यादा ही अकड़ता है ।

ऐसे दिनों के लिए ही,
स्कूल जाना पड़ता है ।
तब जाकर हर बच्चा
जिंदगी में आगे बढ़ता है ।
स्कूल जाना और घर वापस आना
चौदह साल तक करते हैं,
फिर स्कूल से पास हो गए तो
दोस्तों से मिलने को मरते हैं ।

होमवर्क, प्रोजेक्ट, टीचर की डांट
सब आसान लगता है,
जब आगे बढ़के आगे का
पढ़ाई करना पड़ता है ।
कॉलेज को जो दोस्त बने
ठीक है । पर वो बात नहीं,
स्कूल के दोस्तों की यादों का
कहीं कोई भी मात नहीं ।

जो मुश्किल से भी साथ थे
ये कविता उनके नाम ।
जो दिन एक साथ थे
ये कविता उन यादों के नाम ।
उम्मीद है फिर मिलेंगे
जिन्दगी के किसी मोड़ पे,
फिर और यादें बनाएँगे
दोस्ती के ज़ोर पे ।



“दूरी बहुत जरूरी है”

श्री कैलाश सासिया
वरिष्ठ लिपिक, वित्त विभाग

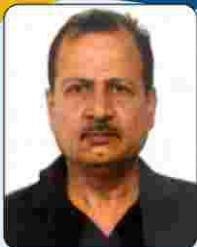
इंसानों को इंसानों से जो दूर करे ये कैसी मजबूरी है ।
जिन्दा रहने के खातिर पर दूरी बहुत जरूरी है ।

सब तामझाम संधान लिए, जाने कैसी तैयारी है ।
जो कर्मकांड को त्यागेगा, वही जीने का अधिकारी है ।
निष्काम भाव से काम त्याग कर, अब घर ही सबकी धूरी है ।
जिन्दा रहने के खातिर अब, दूरी बहुत जरूरी है ।

चुम्बन और आलिंगन युग में, फिर से प्रेमपत्र सा दौर चला है ।
लौट पुरानी यादों का आना, हृदय को झकझोर चला है ।
ये किससे है नादानी के, ये बातें अभी अधूरी हैं ।
जिन्दा रहने के खातिर अब, दूरी बहुत जरूरी है ।

घर छोड़ा जिसने घर की खातिर, दूर देश को चले गये ।
घर तक आने में हानि है, प्रमाण वाद के दिये गये ।
वह कर्म का साधक घर पर है, जो करता नित मजदूरी है ।
जिन्दा रहने के खातिर अब, दूरी बहुत जरूरी है ।

न मंदिर में न मस्जिद में, जो दरगाहों में नहीं मिले ।
श्वेत वर्ज को धारण कर, वो स्वयं चिकित्सक बने मिले ।
प्रभु चन्दन से वंदन होगा तेरा, हर लो जो मजबूरी है ।
जिन्दा रहने के खातिर अब, दूरी बहुत जरूरी है ।



सुरक्षा की पाठशाला

एक दौर था जब सुरक्षा की गारंटी हुआ करता था,
माँ का लगाया हुआ टीका काला,
किन्तु बदलते वक्त के साथ बदल गये हालात,
बदल गई है चाबी, बदल गया है ताला,
पहले थी सीधी-सरल पर अब है इसका अंदाज निराला,
चलो शुरू करते हैं सुरक्षा की पाठशाला ।

रहो घर पर या चलो सड़क पर,
खेल-कूद का हो मैदान या हो काम-काज का स्थान,
त्योहार हो कोई या जमा हुए हों रिश्तेदार सारे,
या फिर दोस्तों के साथ मौज-मस्ती के लिये
जाओ नदी किनारे
करो जब भी कोई काम,
सुरक्षा नियमों का सदैव रखो ध्यान ।

पालन करें ट्राफिक के सारे नियम,
वाहन के पीछे अवश्य लगायें लाल-पीली रेडियम,
चमके जब रेडियम पट्टी गुरुर से,
अंधेरे में भी वाहन नजर आ जाये दूर से ।

चलाओ कार तो बाँधो सीट बेल्ट,
टू व्हीलर पर हो सवार तो पहना करो हेलमेट,
ज़रुरी नहीं कि हर बार किस्मत दे तुम्हें मौका,
लापरवाही बरतोगे तो कब तक दोगे यमराज को धोखा ।

वाहन चलाते वक्त मोबाइल का कतई न करें इस्तेमाल,
गति मर्यादित, नजर रखे सड़क पर,
क्योंकि इंतजार कर रहा है आपका भी कोई घर पर,
खुद समझें औरें को भी समझायें,
सुरक्षा अपनायें, दुर्घटना घटायें ।

बुरी नजर से बचाने के लिये,
भले ही बच्चों को लगायें टीका काला,
किन्तु दुर्घटना से बचने के लिये,
घर-घर लगायें सुरक्षा की पाठशाला ॥

राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

धारा 3(3) के तहत आने वाले कागजात (ये कागजात द्विभाषी रूप में जारी किये जाएं) :-

1. संकल्प (Resolution), 2. साधारण आदेश (General Orders) - [परिपत्र-Circular, कार्यालय आदेश – Office Orders, प्रशासनिक अनुदेश – Administrative Instructions इत्यादि], 3. नियम (Rules), 4. अधिसूचना (Notifications), 5. प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative or other Reports), 6. प्रेस विज्ञप्ति (Press Communiques)-(सभी प्रकार के विज्ञापन/All Advertisements), 7. संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखी जानेवाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट (Administrative or other reports laid down before one house or both houses of the Parliament), 8. संसद के समक्ष प्रस्तुत किये जाने वाले सरकारी कागज-पत्र (Official Papers laid down before the Parliament), 9. संविदा (Contracts), 10. करार (Agreements), 11. अनुज्ञापत्र (Licence), 12. अनुज्ञापत्र (Permit), 13. सूचना (Notice), 14. निविदा-प्रारूप (Tender Forms)

महत्वपूर्ण नोट :

1. उपर्युक्त सभी दस्तावेज अंग्रेजी में जारी न किए जाएं बल्कि द्विभाषी अर्थात् हिन्दी एवं अंग्रेजी में साथ-साथ जारी किए जाएं ।
2. राजभाषा नियम 1976 के नियम-6 के अनुसार अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार किए जाते हैं, निष्पादित किए जाते हैं और जारी किए जाते हैं ।

:: क्षेत्रवार वर्गीकरण ::

‘क्षेत्र क’ : बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, उत्तराखण्ड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र ।

‘क्षेत्र ख’ : गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली ।

‘क्षेत्र ग’ : ऊपर ‘क’ एवं ‘ख’ क्षेत्र के राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के अलावा अन्य सभी राज्य ।

हिन्दी पश्चवाड़ा समापन समारोह की छालकियाँ



दिनांक 28 सितंबर 2020 को हिन्दी पश्चवाड़ा के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित दीनदयाल पोर्ट के उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस. संबोधित करते हुए।



उपाध्यक्ष, डीपीटी के करकमलों से राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार की राजभाषा शील्ड एवं प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए समुद्री विभाग के प्रमुख कैप्टन टी. श्रीनिवास।



उपाध्यक्ष, डीपीटी के करकमलों से राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु द्वितीय पुरस्कार की राजभाषा शील्ड एवं प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए चिकित्सा विभाग की प्रमुख डॉ. कालिन्दी गांधी, मु.चि.अ. एवं नोडल अधिकारी डॉ. महेश बापट, व.ज.मु.चि.अ.।



उपाध्यक्ष, डीपीटी के करकमलों से राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु तृतीय पुरस्कार की राजभाषा शील्ड एवं प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए सिविल अभियांत्रिकी विभाग के प्रमुख श्री सुरेश एस. पाटिल।



उपाध्यक्ष, डीपीटी के करकमलों से पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेता पोर्ट के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



उपाध्यक्ष, डीपीटी के करकमलों से पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेता पोर्ट के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

चीर के जमीन को, मैं प्रदूषण बोता हूं, मैं प्लास्टिक हूं, जीवन छीन लेता हूं।

અંદર્ભાઈન અવધિ કે દૌદાન પોર્ટ કી ઉપલબ્ધિયાં

- ▶ વર્ષ કે દૌરાન રાજભાષા કે ક્ષેત્ર મેં ઉત્કૃષ્ટ કાર્યનિષ્પાદન હેતુ વર્ષ 2019-20 કે લિએ રાજભાષા વિભાગ, ગૃહ મંત્રાલય દ્વારા દીનદયાલ પોર્ટ ટ્રસ્ટ કો ‘‘ખ’’ ક્ષેત્ર મેં ‘‘રાજભાષા કીર્તિ’’ પુરસ્કારોને તહુત ‘‘દ્વિતીય પુરસ્કાર’’ પ્રદાન કરને કી ઘોષણા કી ગઈ ।
- ▶ વર્ષ કે દૌરાન રાજભાષા કે ક્ષેત્ર મેં ઉત્કૃષ્ટ કાર્યનિષ્પાદન હેતુ વર્ષ 2019 કે લિએ નગર રાજભાષા કાર્યાન્વયન સમિતિ, કંડલા/ગાંધીધામ દ્વારા રાજભાષા શીલ્ડ યોજના કે તહુત દીનદયાલ પોર્ટ ટ્રસ્ટ કો ‘‘પ્રથમ પુરસ્કાર’’ પ્રદાન કિયા ગયા ।
- ▶ દિનાંક 02 દિસંબર 2020 કો દીનદયાલ પોર્ટ ટ્રસ્ટ ને 24 ઘંટે કી અવધિ મેં 32 શિપિંગ મૂવમેંટ કરકે અપને પિછલે કીર્તિમાન મેં સુધાર કિયા ।



નગર રાજભાષા કાર્યાન્વયન સમિતિ કી રાજભાષા શીલ્ડ યોજના વર્ષ 2019 હેતુ આયોજિત પુરસ્કાર વિતરણ સમારોહ મેં દીનદયાલ પોર્ટ ટ્રસ્ટ એવં નરાકાસ કે અધ્યક્ષ શ્રી ઎સ. કે. મેહતા જી કે કરકમલોને સે સરકારી કાર્યાલય શ્રેણી મેં પ્રથમ પુરસ્કાર કી રાજભાષા શીલ્ડ એવં પ્રમાણપત્ર ગ્રહણ કરતે હુએ પોર્ટ કે સચિવ એવં હિંદી અધિકારી ।



ગુજરાત રાજ્ય એડ્સ નિયંત્રણ સોસાયટી સે એચઆઈવી/એડ્સ કે નિયંત્રણ હેતુ અસાધારણ કાર્યનિષ્પાદન એવં પ્રતિબદ્ધતા પ્રદર્શિત કરને કે લિએ દીનદયાલ પોર્ટ ટ્રસ્ટ કી ઓર સે પ્રશંસા પ્રમાણપત્ર ગ્રહણ કરતે હુએ શ્રી એ.વી.પ્રધાન, શ્રમ અધિકારી ।



દિનાંક 31 દિસંબર 2020 કો દીનદયાલ પોર્ટ ટ્રસ્ટ ને અપને સ્વામિત્વ વાળી હાર્બર મોબાઇલ ક્રેન સે 83.3 મીટર (275 ફિટ) કી લંબાઈ વાલે પવનચક્કા (વિંડમિલ) બ્લેડોનોની પ્રફર્સ્ટન કે વિહંગમ દૃશ્ય । ભારત કે કિસી ભી મહાપત્રન દ્વારા પ્રફર્સ્ટન કી યોજના કી ગયા યુદ્ધ સબસે લંબા નોભાર હૈ ઔર સાથ હી એશિયા મહાદ્વીપ સે જાને વાળા ઇસ લંબાઈ કી સબસે પહુલા શિપમેંટ હૈ ।

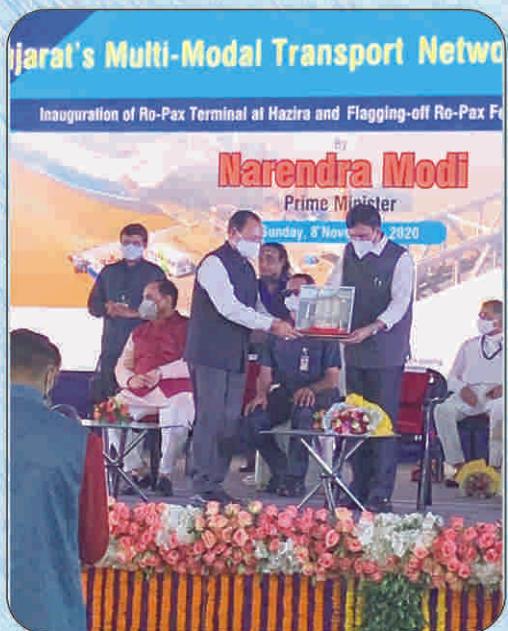


लहरों का राजहंस

20वाँ अंक

जुलाई, 2020 - दिसंबर, 2020

स्वच्छता है तो स्वास्थ्य है, स्वास्थ्य है तो समृद्धि है,
तो फिर आओ बनाएं मिलकर, स्वच्छ एवं स्वस्थ भारत।



माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा दिनांक 08 नवंबर 2020 को गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री विजय रूपानी जी एवं माननीय केंद्रीय पत्तन, पोतपरिवहन और जलमार्ग राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री मनसुख एल. मांडविया जी की उपस्थिति में गुजरात के हजीरा और घोड़ा के बीच रो-पैक्स फेरी सेवा के उद्घाटन हेतु आयोजित समारोह की कुछ और झलकियाँ।



दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

(भारत का नं. 1 महापत्तन)